



अध्यक्षीय निवेदन

भारत के सभी छोटे बड़े दिगम्बर जैन तीर्थों, जैन धरोहरों के संरक्षण-संवर्धन के लिए निरंतर कार्यरत दिगम्बर जैनों की शताधिक वर्ष प्राचीन संस्था भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के अध्यक्ष पद का भार मुझे प्राप्त हुआ इसे मैं अपना सौभाग्य मानता हूँ कि मुझे जैन तीर्थों की सेवा करने का अवसर प्राप्त हुआ।

तीर्थक्षेत्र कमेटी के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री प्रभातचंद्र जी मुंबई ने अपने ढाई वर्ष के कार्यकाल से पहले व्यक्तिगत कारणों से १६ मई २०२१ को त्याग पत्र दे दिया तदुपरांत तीर्थक्षेत्र कमेटी की पदाधिकारी परिषद की सभा में मुझे सर्व-सम्मति से अध्यक्ष पद का भार सौंपा गया। हमने अपने कार्य के निर्वहन की शुरुआत सम्मेद शिखर जी से भगवान शान्तिनाथ के मोक्ष कल्याणक के दिन तलहटी में विराजमान आचार्य श्री विशुद्ध सागरजी महाराज, आचार्य श्री प्रसन्न सागरजी महाराज, मुनिश्री प्रमाण सागर जी महाराज संसद के मंगल आशीर्वाद से भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के तत्वावधान में सम्मेद शिखर जी के श्री शान्तिनाथ टोंक पर अभिषेक, शांतिधारा एवं निर्वाण महोत्सव मनाकर एवं भगवान के श्री चरणों में लाडू समर्पित कर की। जिसका सीधा प्रसारण तीर्थक्षेत्र कमेटी की ओर से जिनवाणी चैनल के माध्यम से किया गया।

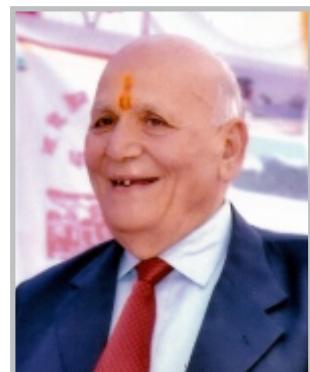
तीर्थक्षेत्र कमेटी द्वारा आयोजित १४ जून २०२१ को भगवान श्री धर्मनाथ जी के मोक्ष कल्याणक के दिन श्री सम्मेदशिखर जी पर्वत से धर्मनाथ टोंक से निर्वाण लाडू महोत्सव का कार्यक्रम संपन्न करने का अवसर प्राप्त हुआ। जिसका सीधा प्रसारण जिनवाणी चैनल के माध्यम से किया गया। इन दोनों सुअवसरों पर देश के सम्पूर्ण जैन समाज ने धर्म लाभ लिया।

मेरी हमेशा से भावना रही है कि भारत के सभी तीर्थों का पूर्ण विकास हो। तीर्थक्षेत्र कमेटी के अध्यक्ष पद पर मैं पूरी श्रृङ्खानिष्ठा से तीर्थों के विकास के लिए भरपूर प्रयास करूँगा। मैं आशा करता हूँ कि मुझे समस्त आचार्यों, मुनिराजों, आर्यिका-माताओं, त्यागी-त्रितीयों व भद्रारकों का आशीर्वाद मेरे ऊपर सदा बना रहे एवं समाज का सहयोग सतत प्राप्त होता रहे।

मेरे अध्यक्ष बनने के साथ ही मुझे विभिन्न अंचलों के

अध्यक्षों, पदाधिकारियों व समाज श्रेष्ठियों के अभिनन्दन पत्रों व अन्य संचार के माध्यमों से शुभकामनाएं प्राप्त हुई हैं, मैं आप सभी को हृदय की गहराइयों से धन्यवाद करता हूँ।

अत्यंत दुःख हुआ कि भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय महामंत्री पद पर



सुशोभित तथा लोकप्रिय समाचार पत्र, समाचार जगत के संस्थापक व प्रधान संपादक श्री राजेंद्र के. गोधा अब हम सब के बीच नहीं रहे। श्री गोधा जी हमेशा उत्साह से भरे रहते थे, तीर्थक्षेत्र कमेटी, महावीर विद्यालय, श्री महावीर जी सहित अनेक राष्ट्रीय संस्थाओं में उनके साथ कई वर्षों तक कार्य करने का अवसर मिला। वे सहज, सरल व्यक्तिके धनी थे, गुरु भक्ति के प्रति उनका समर्पण देखते ही बनता था। उन्होंने अपने पीछे एक हँसता खेलता परिवार छोड़ा है। श्री राजेंद्र के. गोधा भारत की सम्पूर्ण जैन समाज एवं सम्पूर्ण मानव समाज के लिए अमूल्य धरोहर थे। परम पूज्य आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज एवं मुनि पुंगव श्री सुधासागर जी महाराज के प्रति आपकी अनन्य श्रृङ्खा थी। श्री गोधा जी संस्कृति एवं धर्म की सेवा के लिए सतत उद्यत रहते तथा समाज के पीड़ित जनों की सहायता के लिए निरंतर तत्पर रहते। वे कर्मठता के पर्याय लोकतंत्र के चौथे स्तम्भ, पत्रकारिता के पुरोधा, तीर्थों के विकास के लिए सदा कार्यरत एक महान व्यक्तित्व थे।

आपने तीर्थक्षेत्र कमेटी के महामंत्री पद पर रहकर तीर्थों के विकास जीर्णोद्धार के लिए निरंतर कार्य किया। तीर्थक्षेत्रों के लिए आपके योगदान को कभी भुलाया नहीं जा सकता।

श्री गोधा जी के निधन पर मैं भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी महापरिवार की ओर से विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ।



शिखरचन्द्र पहाड़िया

राष्ट्रीय अध्यक्ष



इस अंक में

जैन तीर्थवंदना

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी एवं
भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र ट्रस्ट का

मुख्यपत्र

वर्ष ११ अंक ४ जुलाई २०२१

श्री शिखरचन्द्र पहाड़िया	अध्यक्ष
श्री प्रदीप जैन (पी.एन.सी.)	उपाध्यक्ष
श्री वसंतलाल दोशी	उपाध्यक्ष
श्री नीलम अजमेरा	उपाध्यक्ष
श्री गजराज गंगवाल	उपाध्यक्ष
श्री तरुण काला	उपाध्यक्ष
श्री संतोष जैन (पेंढारी)	महामंत्री
श्री के.सी. जैन(काला)	कोषाध्यक्ष
श्री खुशाल जैन (सी.ए.)	मंत्री
श्री विनोद कोयलावाले	मंत्री
श्री जयकुमार जैन (कोटावाले)	मंत्री

सम्पादकीय सलाहाकार

प्रधान सम्पादक

प्रो. डॉ. अनुपम जैन, इन्डौर
सम्पादक

उपानाथ दुबे

सम्पादकीय सलाहाकार

डॉ. अनेकान्त जैन, दिल्ली

श्री सुरेश जैन (R) IAS, भोपाल

श्री वसंतशास्त्री, चेन्नई

श्री धर्मचंद शास्त्री, दिल्ली

श्री राजेन्द्र जैन महावीर, सनावद

डॉ. सुनील जैन संचय, ललितपुर

पं. डॉ. महावीर शास्त्री, सोलापुर

कार्यालय

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी
हीराबाग, सी.पी.टैक, मुंबई 400 004.

फोन : 022-2387 8293 फैक्स: 022-23859370

website : www.tirthkshetracommittee.com
e-mail : tirthvandana4@gmail.com

whatsapp no.- 7718859108

मूल्य

वार्षिक : 300 रुपये

त्रिवार्षिक : 800 रुपये

आजीवन (दस वर्ष) : 2500 रुपये

अध्यक्षीय निवेदन

3

परिचय श्री संतोष जैन पेंढारी, नागपुर

7

श्रमण संस्कृति के देदीप्यमान नक्षत्र हैं : वात्सल्य वारिधि आचार्य श्री वर्द्धमानसागर जी महाराज

10

भोजन में शुद्धता का जैनाचार

11

महामारी, महामंत्र और आत्मशांति

12

आगम में चातुर्मास स्थापना

17

षट्खण्डागम ग्रन्थ तृतीय होते हुए भी प्रथम कैसे?

18

श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र नेमगिरि जिंतुर

20

मानवीय संवेदनाओं को संक्रमित होने से बचाएं

22

गुरुपूर्णिमा

26

वीर शासन जयंती - क्यों और कैसे

28

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के सदस्य बनकर तीर्थों के संरक्षण-संवर्धन और उनके विकास में
मार्गदर्शन दीजिये

संरक्षक सदस्य

रु. 5,00,000/-

सम्माननीय सदस्य

रु. 31,000/-

परम सम्माननीय सदस्य

रु. 1,00,000/-

आजीवन सदस्य

रु. 11,000/-

नोट:

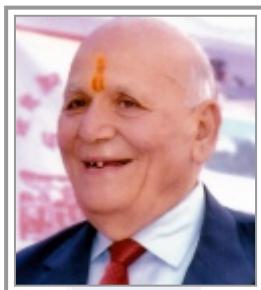
- 1) कोई भी फर्म, पेड़ी, कम्पनी, धर्मादाय ट्रस्ट, संयुक्त कुटुम्ब, सोसायटी भी उपर्युक्त प्रावधान के अंतर्गत सदस्य बन सकेंगे। इस प्रकार की सदस्यता केवल 25 वर्षों के लिये होगी।
- 2) जो सदस्य आयकर की छूट चाहेंगे उन्हें 80जी के अंतर्गत कुछ रकम पर 80जी का लाभ मिलेगा।
- 3) सदस्यता से प्राप्त राशि ध्रुवफण्ड में जमा रहेगी उसके ब्याज की आय ही व्यवस्थापन एवं तीर्थक्षेत्र के संरक्षण, संवर्धन तथा उनके जीर्णोद्धार में व्यय की जायेगी।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी को प्रेषित की जाने वाली राशि बैंक ऑफ बड़ौदा, वी. पी. रोड, मुंबई के सेविंग खाता क्र. 13100100008770, IFSC CODE BARB0VPROAD अथवा बैंक ऑफ इंडिया, सी.पी.टैक, मुंबई के खाता क्रमांक 001210100017881, IFSC CODE BKID0000012 में किसी भी शाखा में निःशुल्क जमा कराकर उसकी सूचना मुंबई कार्यालय को देने की कृपा करें।

पत्रिका में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने हैं। सम्पादकों का इन विचारों से सहमत होना जरूरी नहीं है।



भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के नवनिर्वाचित पदाधिकारियों का हार्दिक अभिनंदन



श्री शिखरचंद पहाड़िया, मुम्बई^{राज्यसभा अध्यक्ष}



श्री प्रदीप जैन (पीएनसी), आगरा
उपाध्यक्ष



श्री वसंतलाल एम. दोशी (जैन), मुम्बई^{उपाध्यक्ष}



श्री नीलम अजमेरा (जैन), उस्मानाबाद
उपाध्यक्ष



श्री तरुण सी.काला, मुम्बई^{उपाध्यक्ष}



श्री संतोष जैन (पेंडारी), नागपुर
महामंत्री



श्री गजराज गंगवाल, दिल्ली^{उपाध्यक्ष}



श्री कैलाशचंद जैन (काला), मुम्बई^{कोषाध्यक्ष}



श्री खुशल जैन 'सी.ए.', मुम्बई^{मंत्री}



श्री विनोद जैन (कोयलावाले), विलासपुर
मंत्री



श्री जयकुमार जैन (कोटावाले) जयपुर
मंत्री



-: कृतज्ञतानुभूतिः:-



आदरणीय श्री शिखरचंद जी पहाड़िया के नेतृत्व में भा. दि. जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की पदाधिकारी परिषद ने जुलाई के प्रथम सप्ताह में मुझे महामंत्री के पद पर मनोनीत कर मेरा गौरव बढ़ाया है इस गुरुतर दायित्व का मैं आप सबके सक्रिय सहयोग से ही वहन कर सकूँगा।

2016-2018 की अवधि में भी मैंने यह दायित्व स्वीकारा था उस समय मुझे परम पूज्य सारस्वताचार्य श्री देवनन्द जी महाराज एवं अन्य समस्त आचार्यों, गणिनी एवं आर्थिक माताओं तथा पूज्य भट्टारक स्वामी जी महानुभावों का भरपूर आशीर्वाद एवं मार्गदर्शन मिला। मैं आशा करता हूँ कि तीर्थों की रक्षा एवं विकास के इस महती अनुष्ठान में मुझे आप सब गुरुजनों का पूर्ववत् ही नहीं अपितु पूर्व की अपेक्षा अधिक आशीर्वाद मिलेगा। मेरा यह दृढ़मत है कि गुरुओं के आशीष बिना तीर्थों का विकास असंभव है, मेरी भावना है कि मेरी गुरु भक्ति एवं तीर्थ भक्ति निरन्तर वृद्धिंगत हो। सभी व्रती भाई-बहनों को मेरी बधाई कार्य का निष्पादन टीम के बिना संभव नहीं है संयोग से हमारे मुम्बई कार्यालय की टीम पिछले कार्यकाल में बहुत सहयोगी रही एवं विश्वास है कि इस बार भी वे दोगुने उत्साह से काम करेंगे।

जैन तीर्थ वंदना का काम अत्यन्त जटिल है तथापि सुदीर्घ सम्पादकीय अनुभव के धनी गुरुभक्त जिनवाणी एवं तीर्थों के संरक्षण हेतु समर्पित प्रो. अनुपम जैन ने एक बार पुनः हमारे निवेदन को स्वीकार कर हमें सहयोग देने की सहमति दी है। उनका प्रधान सम्पादक बनना हम सबके लिए गौरव की बात है उनके प्रति आभार।

अपने नवीन कार्यकाल के प्रथम अंक में मैं अपना मनोगत व्यक्त करना चाहता हूँ भा. दि. जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी सम्पूर्ण दि. जैन समाज की सर्वमान्य संस्था है किन्तु इसका भारत में कहीं कार्यालय हेतु अपना निजी भवन नहीं है जबकि यह एक प्राथमिक आवश्यकता है। भारत के किसी भी स्थान जो हवाई एवं रेलमार्ग से जुड़ा हो वहाँ यदि कोई महानुभाव अपना भूखण्ड कार्यालय/भवन निर्माण हेतु देना चाहे तो वहाँ कार्यालय की स्थापना की जा सकेगी। मैं पदाधिकारी परिषद एवं कमेटी के सभी शुभचिन्तकों से निवेदन करता हूँ कि इस सन्दर्भ में अपने विचारों से मुझे अवगत कराये एवं यह प्रक्रिया शीघ्र शुरू करें। मेरी भावना है कि आगामी ढाई वर्षों में भारत में किसी उपयुक्त स्थान पर संस्था का निजी भवन बन जाये। जिसमें पार्किंग, कार्यालय, छोटा सा पुस्तकालय, रिकार्ड रूम, बैठक कक्ष तथा 2-3 कक्ष आवास हेतु उपलब्ध हो। भवन 2-3 मंजिल का भी हो सकता है।

अन्त में एक बार पुनः गुरुवन्दन एवं समस्त दि. जैन तीर्थों के संरक्षण का संकल्प करते हुए अपनी लेखनी को विराम देता हूँ।

संतोष जैन पेंडारी, नागपुर
महामंत्री-भा.दि. जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी



परिचय श्री संतोष जैन पेंढारी, नागपुर

27 फरवरी 1957 को सुश्रावक श्री सुंदरलाल जी जैन के परिवार में मातुश्री शोभा जी जैन की कुक्षि से श्री संतोष जैन का जन्म नागपुर में ही हुआ। 4 भाइयों के परिवार में आप सबसे बड़े हैं। आपकी 2 पुत्रियाँ श्रीमती कामिनी एवं श्रीमती स्वाति अपने अपने कुल को गौरवान्वित कर रही हैं। एक मात्र पुत्र श्री वृषभ जी आपको व्यापार में सहयोग करते हैं। प्रारम्भ से ही वैज्ञानिक अभियुक्ति सम्पन्न श्री संतोष जी ने रसायन शास्त्र में B.Sc.(Hons) की डिग्री हासिल की है। कालान्तर में आप रसायन शास्त्र से ही सम्बद्ध जैन एसिड्स एण्ड केमिकल्स फर्म के माध्यम से व्यापार करने लगे। अपनी ईमानदार छवि, समयबद्धता एवं कर्तव्यनिष्ठा के कारण आपका व्यवसाय बढ़ता गया एवं वर्तमान में न केवल महाराष्ट्र अपितु म.प्र., छत्तीसगढ़, गुजरात एवं उड़ीसा में भी उसका व्यापक विस्तार हो गया है।

व्यावसायिक कुशलता के साथ ही आपकी सामाजिक कार्यों में विशेष रुचि है फलतः आप रोटरी क्लब आफ नागपुर (पू.), नागपुर विदर्भ चेम्बर आफ कामर्स, लाडपुरा एजुकेशन सोसायटी के वरिष्ठ कार्यकारी पदों पर रहने के साथ ही महाराष्ट्र शासन के विशेष कार्यकारी दंडाधिकारी के पद को 2008 तक शोभायमान करते रहे। आप विदर्भ डाइज एन्ड केमिकल मर्चेन्ट एसोसिएशन के भी अध्यक्ष हैं।

दिग्म्बर जैन कुल में जन्म लेने एवं पारिवारिक संस्कारों के कारण आपका जैन तीर्थों एवं मुनियों के प्रति भी प्रारम्भ से लगाव रहा। फलतः 90 के दशक में श्री सम्मेदशिखर आंदोलन समिति का आपने महामंत्री के रूप में नेतृत्व किया। परम पूज्य प्रज्ञाश्रमण आचार्य श्री देवनन्द जी महाराज की प्रेरणा से स्थापित णमोकार तीर्थ ट्रस्ट के आप

उपाध्यक्ष हैं 2016-2018 के मध्य भारतवर्षीय दिग्म्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के महामंत्री रहने के साथ ही भगवान गोमटेश्वर बाहुबली महामस्तकाभिषेक महोत्सव-2018 की जीर्णोद्धार समिति के भी आप अध्यक्ष रहे। आपके नेतृत्व में कर्नाटक के अनेक तीर्थों का जीर्णोद्धार एवं विकास इस पावन प्रसंग पर सम्पन्न हुआ।



गुरु भक्ति के क्रम में आपकी नागपुर एवं समीपवर्ती तीर्थों पर होने वाले समस्त चातुर्मासों में 2002-2009 के मध्य अध्यक्ष आदि प्रमुख पदों के साथ केन्द्रीय भूमिका रही। आ. गुणनन्द जी, आचार्य पद्मनन्द जी एवं आर्यिका विशिष्टश्री माताजी के संघों का आपने संघपति के रूप में लम्बा विहार कराया।

श्री दिग्म्बर जैन सेनगण मंदिर, इतवारी-नागपुर तथा बधेरवाल समाज सहायता ट्रस्ट के अध्यक्ष के रूप में आप अपनी सेवायें प्रदान कर रहे हैं।

माननीय श्री शिखरचंद्र पहाड़िया जी के नेतृत्व के भारतवर्षीय दिग्म्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की पदाधिकारी परिषद ने एक बार पुनः अपनी कर्मठता, दूरदृष्टि एवं समर्पण भावना का सम्मान करते हुए आपको कमेटी के महामंत्री का गुरुतर दायित्व दिया है।

हम सब आशान्वित हैं कि आपकी कुशल कार्यपद्धति से तीर्थक्षेत्र कमेटी हमारे तीर्थों का संरक्षण एवं द्रुत विकास करेगी।





तीर्थक्षेत्र कमेटी के नए अध्यक्ष श्री शिखरचंद पहाड़िया जी का अभिनन्दन समारोह सम्पन्न



तीर्थक्षेत्रों के संरक्षण की दिशा में निरंतर कार्यरत, शताधिक वर्ष प्राचीन भारतवर्षीय दिग्म्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी मुंबई के नवनिर्वाचित अध्यक्ष श्री शिखरचंद्र जी पहाड़िया के प्रति समर्पित आशीर्वचन एवं अभिनंदन समारोह कार्यक्रम का सीधा प्रसारण पारस चैनल के माध्यम से २६ मई २०२१ मध्यान्ह २ से ५ बजे तक रखा गया। पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री प्रभात जैन मुंबई ने अपने ढाई वर्ष के कार्यकाल से पहले व्यक्तिगत कारणों से त्याग पत्र देने के पश्चात सर्व सम्मति से श्री शिखरचंद्र जी पहाड़िया को अध्यक्ष पद पर मनोनीत किया गया। इस अवसर पर जम्बूद्वीप हस्तिनापुर में संसंघ विराजमान गणिनी आर्यिका १०५ श्री ज्ञानमती माताजी ने भारतवर्षीय दिग्म्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के नवनिर्वाचित राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री शिखरचंद्र पहाड़िया को आशीर्वचन प्रदान किया। स्वस्ति श्री रवीन्द्र कीर्ति जी ने पहाड़िया जी को हार्दिक शुभकामनायें एवं आश्वासन दिया कि तीर्थक्षेत्रों के विकास में हम हमेशा आपके साथ रहेंगे। इसी श्रृंखला में महाराष्ट्र अंचल के अध्यक्ष श्री संजय पापड़ीवाल ने श्री शिखरचंद्र पहाड़िया के प्रति हार्दिक अभिनन्दन व्यक्त किया। महासभा से श्री जमनालाल जी हापावत ने पहाड़िया जी को शुभकामनायें प्रकट की। इस अवसर पर तीर्थक्षेत्र कमेटी के नवनिर्वाचित राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री शिखरचंद्र पहाड़िया जी को मुंबई के भूलेश्वर मंदिर में उपस्थित सभी समाजश्रेष्ठियों ने पगड़ी एवं हार-मुकुट मालाएं पहनाकर हार्दिक अभिनंदन किया। इस कार्यक्रम में पारस चैनल एवं ज्ञम एप के माध्यम से अनेक लोगों ने हिस्सा लिया एवं भारतवर्षीय दिग्म्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के नवनिर्वाचित राष्ट्रीय अध्यक्ष जी का हार्दिक अभिनंदन व्यक्त किया।

तीर्थक्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री शिखरचंद्र पहाड़िया ने अनोप मंडल की आसामाजिक गतिविधियों पर कार्यवाही किये जाने हेतु प्रधानमंत्री को लिखा पत्र

गत दिनों सोशल मीडिया, यूट्यूब चैनल के माध्यम से अनोप मंडल के सदस्यों के द्वारा जैन धर्म के विरुद्ध दुष्प्रचार किया जा रहा है जिसमें जैन समाज एवं जैन संतों के प्रति अनाप-शनाप बातें व कोरोना महामारी देश में फैलाने वाले जैन हैं जैसी बातें कही जा रही हैं। भारतवर्षीय दिग्म्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के नवनिर्वाचित राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री शिखरचंद्र पहाड़िया ने अनोप मंडल की इन असामाजिक गतिविधियों के विरोध में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी को पत्र लिखा है साथ ही अनोप मंडल एवं उसकी टीम की सीबीआई द्वारा जाँच करवाकर कठोर कार्यवाही करने की माँग की है। पत्र की एक-एक प्रतिलिपि गृहमंत्री श्री अमित शाह, गुजरात के मुख्यमंत्री श्री विजय रूपाणी व राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत जी को प्रेषित की गयी है।

अध्यक्ष महोदय ने पत्र में सरकार से जैन समाज की ओर से मुख्य मांग भी की है-

१. सीबीआई द्वारा अनोप मंडल की जाँच और जैन समाज के विरुद्ध भ्रामक प्रचार करने और सांप्रदायिक सौहार्द बिगाड़ने के लिए अनोप मंडल के मुकनराम को गिरफ्तार कर कठोर कानूनी कार्यवाही की जाए।
२. अनोप मंडल द्वारा संचालित वेबसाइटों, सोशल मीडिया खातों (ट्विटर, फेसबुक, व्हाट्सएप, यूट्यूब) व किताब जगत हितकरणी को प्रतिबंधित किया जाए।
३. अनोप मंडल पर संपूर्ण भारत में पूर्ण प्रतिबंध लगाया जाए।
४. भारत सरकार पदविहारी जैन साधु-साध्वियों की सुरक्षा व जीवनरक्षा की व्यवस्था करे, इस संबंध में सभी राज्यों की पुलिस को निर्देश जारी करे।





सम्पादकीय



भगवान ऋषभदेव की 108 फीट उत्तुंग विश्व की सबसे बड़ी दि. जैन प्रतिमा के मांगीतुंगी (नासिक-महाराष्ट्र) के पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव की अवधि में भारतवर्षीय दिग्म्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की मनोनीत अध्यक्षा समाज गौरव श्रीमती सरिता एम. के. जैन, चेन्नई के आग्रह पर मैंने अप्रैल 2016 से लेकर नवम्बर 2018 तक तीर्थक्षेत्र कमेटी के मुख पत्र जैन तीर्थ वन्दना के सम्पादन का दायित्व सम्हाला था। सुस्थापित, मान्य परम्परा के अनुरूप मैंने नई कमेटी के कार्यभार ग्रहण करने के पूर्व ही इस पद के दायित्व से स्वयं को मुक्त कर लिया था। मुझे खुशी है कि दिसम्बर 2018 से लेकर गत माह पर्यन्त भाई श्री राजेन्द्र जी गोधा, जयपुर के कुशल नेतृत्व में पत्रिका का सफलता से सम्पादन और प्रकाशन होता रहा। हमारे समाज के समर्पित विद्वानों तथा जिज्ञासु युवा लेखकों ने इस यज्ञ में अपनी आहुतियाँ दी। फलत: अप्रैल 2016 से अद्यतन न केवल तीर्थों के संरक्षण और विकास अपितु जैन परम्पराओं, जैन आचार्यों, जैन पर्वों तथा जिनवाणी की प्रतीक प्राचीन पांडुलिपियों एवं पुरावशेषों पर यथेष्ट प्रमाणिक एवं ज्ञानवर्द्धक सामग्री प्रकाशित की गई। कथंचित् यह लिखने की आवश्यकता नहीं कि हमारे मुम्बई कार्यालय का प्रबन्ध देखने वाले भाई श्री उमानाथ दुबे एवं उनकी टीम का समर्पण एवं पत्रिका के समयानुसार प्रकाशित करने की उत्कंठा का भी एक महत्वपूर्ण योगदान रहा।

समाज की कई दशकों से निर्विकल्प रूप में महती सेवा करने वाले स्वनामधन्य श्रेष्ठी परम आदरणीय श्री शिखरचंद जी पहाड़िया सा। और तीर्थों के प्रबन्धन में निष्णात एवं अपनी कर्मठता हेतु सम्पूर्ण जैन समाज में लोकप्रिय भाई श्री संतोष जी पेंढारी ने जब हमारे परम पावन तीर्थों की सुरक्षा एवं विकास का संकल्प कर नए दायित्व को स्वीकार किया है तो तीर्थ भक्त होने के नाते मेरा भी कर्तव्य उनको सहयोग करना है। फलत: एक बार पुनः अपने सुधीपाठकों, निष्ठावान एवं प्रबुद्ध लेखकों विभिन्न तीर्थों के सजग पदाधिकारियों से पूर्ण सहयोग की प्रत्याशा में मैं सम्पादन का दायित्व स्वीकार कर रहा हूँ। मुझे आशा है कि नवगठित सम्पादक मण्डल के सहयोग से हम पत्रिका को अधिक रोचक, ज्ञानवर्द्धक एवं संग्रहणीय बना सकेंगे। प्रस्तुत अंक में युवा विद्वान डॉ. अनेकांत जैन का महामारी एवं महामंत्र पर शोधपूर्ण लेख प्रकाशित है। अन्य प्रबुद्ध लेखकों के लेख भी सामयिक रूप से प्रकाशित किए हैं।

हमारा विचार इसकी गुणवत्ता में वृद्धि हेतु कठिपय प्रक्रियात्मक संशोधन करने का भी है जिसकी जानकारी हम शीघ्र ही आपको प्रेषित करेंगे। गत कार्यकाल में हमने समाज के चिन्तन को जानने हेतु युवाओं एवं महिलाओं हेतु 2 वर्गों में निबन्ध प्रतियोगिताएँ आयोजित की जिससे हमें समाज के दृष्टिकोण की जानकारी हुई। हम इस बार भी कुछ नये वर्गों यथा तीर्थ प्रबन्धकों, तकनीकी क्षेत्र से जुड़े भाई/बहनों, समाज के वरिष्ठों का मंतव्य जानने का प्रयास करेंगे। सोश्यल मीडिया प्लेटफार्म एवं इन्टरनेट का ज्यादा से ज्यादा सार्थक/प्रामाणिक उपयोग कैसे हो? इस बारे में भी हम शीघ्र ही योजना आपके सम्मुख रखेंगे। क्रमिक रूप से हम अपने तीर्थों एवं महान आचार्यों का परिचय भी आप तक पहुँचाने का प्रयत्न करेंगे।

हमारे पूज्य आचार्य, मुनिगण एवं आर्थिका माताओं की इस अंक के पहुँचने तक वर्षायोग की स्थापना हो चुकी होगी। हम आशा करते हैं कि आप सब अपने अपने क्षेत्रों में तीर्थों के विकास/संरक्षण हेतु किये जाने वाले नवाचारों से हमें अवश्य अवगत करायेंगे। पूज्य संतों के चरणों में नमन एवं साधर्मी बन्धुओं से जयजिनेन्द्र सहित।

डॉ. अनुपम जैन, ज्ञानछाया, डी-14, सुदामानगर,
इन्दौर-452 009 (म.प्र.) मो.: 94250 53822

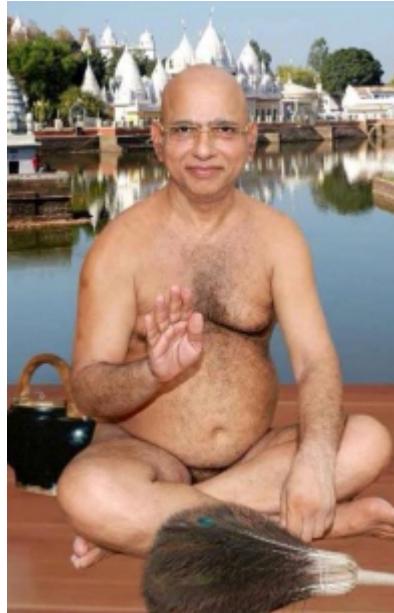


श्रमण संस्कृति के देदीप्यमान नक्षत्र हैं : वात्सल्य वारिधि आचार्य श्री वर्द्धमानसागर जी महाराज

भारतीय संस्कृति के उन्नयन में श्रमण संस्कृति का महनीय योगदान है। श्रमण संस्कृति के बिना 'भारतीय संस्कृति' की कल्पना नहीं की जा सकती है। इस गौरवमयी श्रमण परंपरा में परम पूज्य आचार्य श्री वर्द्धमानसागर जी महाराज का अहम योगदान है। उन्होंने जो भी बीड़ा उठाया वह अपने आप में एक बेमिसाल कदम है। भगवान आदिनाथ से लेकर भगवान महावीर तक के सिद्धांतों- शिक्षाओं को जन -जन तक पहुंचा कर इस दीक्षा को सार्थक किया। उन्होंने भगवान महावीर के सर्वोदय तीर्थ 'कोपढाचिंतन से उसकी युगानुरूप छटा भी बिखेरी। भगवान महावीर की तरह अध्ययन को चिंतन की कसौटी पर कस कर आचरण में उसका अनुवाद करना अच्छी तरह जानते थे। उन्होंने जीवन की जो दिशा खोजी वह ऐतिहासिक थी और उसपर चलकर भी एक ऐतिहासिक उपलब्धि प्राप्त की। परम पूज्य आचार्य श्री 108 वर्धमान सागर जी महाराज का गृहस्थ अवस्था का नाम यशवंत कुमार था। श्री यशवंत कुमार का जन्म मध्य प्रदेश के खरगोन जिले के सनावद ग्राम में हुआ। श्रीमती मनोरमा देवी एवं पिता श्री कमलचंद्र जैन पंचोलिया के जीवन में इस पुत्र रत्न का आगमन दिनांक 8 सितम्बर सन 1950 को हुआ। आपने बी.ए. तक लौकिक शिक्षा ग्रहण की, सांसारिक कार्यों में आपका मन नहीं लगता था। संयोगवश परम पूज्य ज्ञानमती माताजी का सनावद में चातुर्मास हुआ जिसमें आपने अपने वैराग्य सम्बन्धी विचारों 'को और अधिक दृढ़तर बनाया। आपने आचार्य श्री विमल सागर जी महाराज से आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत ग्रहण किया। 48 वर्ष की अवस्था में आचार्य श्री धर्मसागर जी महाराज से आपने मुनि दीक्षा ग्रहण की, श्री शांतिवीर नगर, श्री महावीर जी में मुनि दीक्षा लेकर आपको मुनि श्री वर्धमानसागर नाम मिला। चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शान्तिसागर जी महाराज की परम्परा के पंचम पटाधीश होने का आपको गौरव प्राप्त है। इस पंचम काल में कठोर तपश्चर्या धारी मुनि परम्परा को पुनः स्थापित करने का जिन आचार्य श्री शांति सागर जी महाराज को गौरव हासिल हुआ है, उसी परम्परा के पंचम पटाधीश के रूप निर्दोष चर्या का पालन करते हुए पूरे देश में धर्म की गंगा बहाने का पुण्य मिलना निश्चित इस जन्म के अलावा पूर्व जन्म की साधनाओं का ही सुफल है। आचार्य श्री वर्धमान सागर जी अत्यंत सरल स्वभावी होकर महान क्षमा मूर्ति शिखर पुरुष हैं, वर्तमान वातावरण में चल रही सभी विसंगताओं एवं विपरीताओं से बहुत दूर हैं, उनकी निर्दोष आहार चर्या से लेकर सभी धार्मिक किर्याओं में हम आज भी चतुर्थ काल के मुनियों के दर्शन का दिग्दर्शन कर सकते हैं।

नमस्कार से चमत्कार

चमत्कार को नमस्कार नहीं, बल्कि नमस्कार में चमत्कार छुपा हुआ होता है। अगर भक्ति निष्काम हो तो फल जरूर मिलता है। आचार्य श्री वर्धमान सागर



जी महाराज जब मुनि अवस्था में थे तब दीक्षा के उपरांत महाराज की नेत्र ज्योति चली गई थी, तब उन्होंने जयपुर (खानिया जी) के चन्द्रप्रभु मंदिर में शांति भक्ति का पाठ किया था तब 52 घंटों के बाद नेत्र ज्योति वापस आई थी। चारित्र चक्रवर्ती प्रथमाचार्य श्री 108 शांतिसागर जी महाराज की अक्षुण्ण पट्टपरम्परा के चतुर्थ पट्टाचार्य श्री 108 अजित सागर जी महाराज पत्र के माध्यम से लिखित आदेश अनुसार पारसोला राजस्थान में 24 जून 1990 आषाढ़ सुदी दूज को आचार्य पद गुरु आदेश अनुसार दिया गया। उल्लेखनीय है कि श्रवणबेलगोला कर्नाटक में बाहुबली भगवान के सुप्रसिद्ध महामस्तकाभिषेक में वर्ष 1993, 2006 एवं वर्ष 2008 में प्रमुख नेतृत्व दिया गया। श्री श्रवणबेलगोला महामस्तकाभिषेक में भारत के राष्ट्रपति जी, प्रधानमंत्री जी, मुख्यमंत्री जी, राज्यपाल सहित अनेक वरिष्ठ राजनेताओं ने आपसे आशीर्वाद प्राप्त कर जीवन को धन्य बनाया।

आचार्यश्री से जुड़े विशेष उल्लेखनीय तथ्य :

- पानी की व्यवस्था गुजरात में आहार के लिए पानी कुएं का पानी लबालब हुआ।
- श्रवणबेलगोला में 1993 में मूसलाधार वर्षा से पानी की समस्या दूर।
- कोथली में प्रवेश के पूर्व नदी- नाले, कूप पानी से लबालब।
- कमंडल के पानी से श्रावक बालक को नया जीवन मिला।
- 1३ का अशुभ अंक बना शुभ- आपके जन्म के पूर्व 8 भाई और चार बहनों ने जन्म लिया जो काल के ग्रास बने। १३वीं संतान का अंक आपके जन्म से शुभ बना और आप जगत के तारणहार हो गए। मानव से महामानव हो गए। आप के बाद चौदहवीं संतान भी बाद में जीवित नहीं रही। आप माता-पिता की एकमात्र जीवित संतान हैं।
- पैर में चक्र: कनक गिरी में आपके पैर में कष्ट होने पर भट्टारक स्वामी जी ने देखा कि आपके पैर में चक्र है जो कि इस बात का सूचक है कि आचार्य श्री वर्धमान सागर जी के द्वारा जैन धर्म का प्रचार-प्रसार और बहुत प्रभावना होगी।
- अद्भुत संयोग: बारह संतानों के निधन के कारण माता-पिता ने श्री महावीरजी में उल्टा स्वस्तिक बनाकर उनके लंबे जीवन की कामना की थी, यह संकल्प किया था कि इनके जन्म के बाद इनके बाल उतारेंगे इनके बाल निकालेंगे। संयोग कहें कि इनकी मुनि दीक्षा वही श्री महावीरजी में हुई और उनके केशलोच हुए।
- पद के प्रतिउदासीनता। उपाध्याय पद लेने से इनकार।
- अचार्यश्री का प्रमुख आदेश समाज में कैंची नहीं सुई बनकर रहो। जहाँ जो परंपरा चल रही है उससे छेड़छाड़ न करें।



10. इचलकरंजी सहित अनेक नगरों की समाज को एक किया। अपूर्व वात्सल्य बीमार श्रावक को दर्शन देने स्वयं चलकर गए। टोडारायसिंह में दिगंबर श्वेतांबर समाज को एक किया।
11. कोई प्रोजेक्ट नहीं। पंचम पट्टाधीश आचार्य श्री वर्द्धमान सागर जी के नाम पर कोई क्षेत्र या गिरि नहीं है। श्रावक के दान का सदुपयोग हो यही उनकी मंगल प्रेरणा रहती है।

12. पूर्वाभासः पूर्वाभास के कारण एक स्थान पर रात्रि विश्राम नहीं किया। मैरिज गार्डन के कारण कुछ श्रावकों ने वहां विश्राम किया। उस गांव के बारूद फैक्ट्री में अचानक आग लगती है और सभी श्रावक रात्रि में आचार्यश्री के पास पहुंचते हैं। तब पता लगता है कि रात्रि को गांव में आग लग गई थी और जान माल का खतरा हो गया था। आचार्य श्री वर्द्धमान सागर वर्तमान के वर्द्धमान के समान साधना और प्रभावना कर रहे हैं।



कोरोना संदर्भः

भोजन में शुद्धता का जैनाचार

- सीए आदीश कु जैन



आज कोरोना के चलते खान पान और शुद्धता की चर्चा जोरों पर है। अच्छे स्वास्थ और बीमारियों से बचने के लिए वनस्पति आधारित और शाकाहारी भोजन का महत्व सारा विश्व समझ रहा है, और कुछ जाने माने रेस्टोरेंट भी अब वनस्पति आधारित और शाकाहारी भोजन परोसने लगे हैं। लेकिन इसके साथ साथ खानपान में शुद्धता अर्थात् हाइजीन का भी अपना विशेष महत्व है। जैनाचार में खानपान की शुद्धता (हाइजीन) की भी सटीक वैज्ञानिक व्याख्या है। जैन रसोई में सोला का भोजन शब्द प्रयोग किया जाता है, ये न तो केवल नाम है और न ही कोई रूढिवादी परम्परा है। इसमें शुद्धता के ठोस वैज्ञानिक आधार हैं। शुद्धता के दृष्टिकोण से सोला के भोजन की विशुद्ध भोजन व्यवस्था समझना भी अत्यन्त महत्वपूर्ण है। सोला का अर्थ है सोलह और ये शुद्धता के सोलह नियम हैं। भोजन की पूर्ण शुद्धता के लिए ये नियम इस प्रकार हैं:

- भोजन निर्माण प्रक्रिया के सोलह नियम चार वर्गों में विभाजित हैं।
1. द्रव्य शुद्धि, 2. क्षेत्र शुद्धि, 3. काल शुद्धि, 4. भाव शुद्धि इन चारों वर्गों में चार चार नियम हैं,
- इस प्रकार कुल सोलह नियम हैं।

१. द्रव्य शुद्धि-

- अन्न शुद्धि - खाद्य सामग्री सड़ी गली घुनी एवं अभक्ष्य न हो।
- जल शुद्धि - जल जीवानी (छाना) किया हुआ और प्रासुक (कुनकुना) हो।
- अग्नि शुद्धि - ईंधन देखकर (जीवादि न हों) शोध कर उपयोग किया गया हो।
- कर्त्ता शुद्धि - भोजन बनाने वाला स्वस्थ हो, स्नान करके, धुते शुद्ध वस्त्र पहने हों, नाखून बड़े न हों, अंगुली वगैरह कट जाने पर खून का स्पर्श खाद्य वस्तु से न हो, गर्मी में पसीने का स्पर्श न हो जिससे पसीना खाद्य वस्तु में नागिरे।

२. क्षेत्र शुद्धि-

- प्रकाश शुद्धि - रसोई में समुचित सूर्य का प्रकाश रहता हो।
- वायु शुद्धि - रसोई में शुद्ध हवा का संचार हो।
- स्थान शुद्धि - रसोई लोगों के आवागमन का सार्वजनिक

- स्थान न हो एवं अंधेरे वाला स्थान न हो।
- दर्गाधि शुद्धि - हिंसादि कार्य न होता हो और गंदगी से दूर हो।
3. काल शुद्धि -

- ग्रहण काल - चंद्र ग्रहण, सूर्य ग्रहण के काल में भोजन न बनाया जाय।
- शोक काल - शोक दुःख अथवा मरण के समय भोजन न बनाया जाय।
- रात्रि काल - रात्रि के समय भोजन नहीं बनाना चाहिए।
- प्रभावना काल - धर्म प्रभावना अर्थात् उत्सव काल के समय भोजन नहीं बनाना चाहिए।

४. भाव शुद्धि -

- वात्सल्य भाव - पात्र और धर्म के प्रति वात्सल्य होना चाहिए।
- करुणा भाव - सब जीवों एवं पात्र के ऊपर दया का भाव रखना चाहिए।
- विनय भाव - पात्र के प्रति विनय का भाव होना चाहिए।
- दान भाव - दान करने का भाव रहना चाहिए।

इन सोलह नियमों में हाइजीन की कई बातों की वैज्ञानिकता तो लोगों की समझ में आ जाती हैं, लेकिन उनकी तार्किक सोच केवल द्रव्य शुद्धि और क्षेत्र शुद्धि तक ही सीमित रह जाती है। जबकि पूर्ण शुद्धता के लिए काल शुद्धि और भाव शुद्धि भी उतने ही जरूरी हैं। काल शुद्धि का वैज्ञानिक आधार बॉडी क्लॉक और खाद्य पदार्थों की काल के अनुसार बदलती तासीर से जुड़ा है। भाव शुद्धि का वैज्ञानिक आधार भावनाओं के बायोलॉजिकल सिग्नल्स में निहित है, इन सिग्नल्स शुद्धि के स्वास्थ में महत्व का आकलन अब वैज्ञानिक भी करने लगे हैं। भोजन की शुद्धि के लिए इन सोलह नियमों के पालन की व्यवस्था ही विशुद्ध सोला के भोजन का जैनाचार है जो अच्छे स्वास्थ के लिए उपयोगी है। साधु, साधिक्यों की आहार चर्या में इन नियमों का पूर्ण पालन आवश्यक है। कई जैन अपने रोजमर्रा के जीवन में भी इनका पूर्ण या आंशिक पालन करने में प्रयासरत रहते हैं और इसी शुद्धता के ध्यान से कई जैन, पार्टियों, रेस्टोरेंट में खानपान से परहेज करते हैं।





महामारी, महामंत्र और आत्मशांति

डॉ. अनेकान्त कुमार जैन, नई दिल्ली



बहुत धैर्य पूर्वक भी पढ़ा जाय तो कुल 15 मिनट लगते हैं 108 बार भावपूर्वक णमोकार मंत्र का जाप करने में, किन्तु हम वो हैं जो घंटों न्यूज चैनल देखते रहेंगे, वीडियो गेम खेलते रहेंगे, सोशल मीडिया पर बसे रहेंगे, व्यर्थ की गप्प शप्प करते रहेंगे लेकिन प्रेरणा देने पर भी यह अवश्य कहेंगे कि 108 बार हमसे नहीं होता, आप कहते हैं तो 9 बार पढ़ लेते हैं बस और वह 9 बार भी मंदिर बन्द होने से घर पर कितनी ही बार जागते सोते भी नहीं पढ़ते हैं, जब कि आचार्य शुभचंद्र तो यहाँ तक कहते हैं कि इसका पाठ बिना गिने अनगिनत बार करना चाहिए।

हमारे पास सामायिक का समय नहीं है। लॉकडाउन में दिन रात घर पर ही हैं फिर भी समय नहीं है। हम वो हैं जिनके पास पाप बांधने के लिए 24 घंटे समय है किंतु पाप धोने और शुभकार्य के लिए 15 मिनट भी नहीं हैं और हम कामना करते हैं कि सब दुख संकट सरकार दूर करे-ये उसकी जिम्मेदारी है।

कितने ही स्थानों पर णमोकार का 108 बार जाप के साथ सामायिक का समय उनके पास भी नहीं है जो सुबह शाम शास्त्र स्वाध्याय करते हैं, पूजन प्रक्षात रहते हैं। वे यह सोच कर मन को बहला लेते हैं कि इतना समय तो हम तत्त्वविवेचन और चिंतन में, अन्य धार्मिक क्रियाओं में लगा ही रहे हैं अब 108 बार णमोकार मंत्र से क्या होगा? वे यह विचार करते और कहते भी देखे जाते हैं कि *मणि तंत्र मंत्र बहु होई मरते न बचावे कोई*(छहढाला ५/२) अतः तंत्र मंत्र के चक्कर में नहीं पड़ना चाहिए। यह विचार हमारे प्रमाद को और अधिक पुष्ट कर देता है। तथा 'वास्तविक जैन दर्शन कुछ और है'- ऐसा कह-कहकर हम इस तरह की प्रवृत्ति की उपेक्षा भी बहुत आसानी से कर देते हैं बिना यह विचार किये कि अनेकान्त का नाम जैनदर्शन है न कि एकांत का नाम। यदि छह ढाला के इस उद्धरण का अर्थ देखें तो यहाँ यह कह रहे हैं कि यदि अंत समय आ ही गया है तो मरते कोई भी नहीं बचा पाता है, वे चाहे मणि हों, तंत्र हों या मन्त्र हों या अन्य कोई भी उपाय हो। किन्तु अंत समय में मन्त्र नहीं पड़ना चाहिए- ये अर्थ तो नहीं निकल रहा है।

वास्तव में यदि देखा जाय तो जैन परंपरा में मन्त्रों और उनकी शक्तियों का विवेचन भी प्राचीन काल से ही होता आया है। हाँ, यह अवश्य है कि मन्त्रों के दुरुपयोग होने के कारण, उनके लौकिक प्रयोजन की अनावश्यक वृद्धि के भय से कालांतर में वह आत्मकल्याण में कथंचित बाधक होने से उसके प्रयोगों को हतोत्साहित किया गया।

आचार्य कुन्दकुन्द ने रयणसार में लौकिक प्रयोजन से जो तंत्र मंत्र की साधना और प्रयोग करते हैं उन्हें दान देने का निषेध किया है-

जंतं मंतं तंतं परिचरियं पक्ष्वाय पियवयणं।

पदुच्चपंचमयाले भरहे दाणं ण किं पि मोक्षस्स ॥

(रयणसार/गाथा २८)

भावार्थ यह है कि इस भरत क्षेत्र में, पंचम काल में लौकिक सेवा के

उद्देश्य से पक्षपात पूर्ण खुशामद के उद्देश्य से यंत्र, मंत्र और तंत्र के निमित्त जो दान दिया जाता है वह मोक्ष का कारण बिलकुल भी नहीं बनता है।

जोड़सविज्ञामंत्तोपजीणं वा य वस्सववहारं ।

धणधण्णपडिगहणं समणाणं दूसणं होइ

॥(रयणसार/१०९)

अर्थात् जो मुनि ज्योतिष शास्त्र से व किसी अन्य विद्या से व मंत्र-तंत्रों से अपनी उपजीविका करता है, जो बनियों के जैसा व्यवहार करता है और धनधान्य आदि सबका ग्रहण करता है वह मुनि समस्त मुनियों को दूषित करने वाला है।

भारत में एक समय ऐसा भी आया था जब जैन परंपरा में भी मन्त्र विद्या का प्रयोग आत्मानुभूति की वीतराग साधना के स्थान पर लौकिक प्रयोजनों की सिद्धि हेतु बढ़ने लगा था, अतः इस प्रवृत्ति पर अंकुश लगाना अनिवार्य हो गया था। जिसका परिणाम यह हुआ कि जैन परंपरा में मन्त्र विद्या का हास होता चला गया। दुरुपयोग का भय इतना बढ़ गया कि उस फेर में सही साधना के अभाव में सदुपयोग भी बाधित होने लगा। मन्त्र एक शक्ति है, उसका उपयोग भी किया जा सकता है और दुरुपयोग भी। जैसे चाकू सब्जी बनाने के काम भी आती है और किसी की हत्या भी उससे की जा सकती है। यह उपयोगकर्ता के भाव पर निर्भर करता है। अब अनिष्ट प्रयोग के भय से चाकू का रसोई में उपयोग तो नहीं रोका जा सकता है।

मन्त्र का महामंत्रत्व

यह मन्त्र महामंत्र क्यों कहा जाता है? इसके कई कारण हैं, उनमें से हम कुछ महत्वपूर्ण कारणों को यहाँ बताना चाहेंगे—

१. यह अनादि और अनिधन मन्त्र है।
२. यह निष्काम मन्त्र है। इसमें किसी चीज की कामना नहीं है।
३. अन्य सभी मन्त्रों का यह जनक मन्त्र है।
४. इस मन्त्र में व्यक्ति पूजा नहीं है। अर्थात् गुणों और उसके आधार पर उस पद पर आसीन शुद्धात्माओं को नमन किया गया है।
५. यह सांप्रदायिक नहीं है अपितु परम आध्यात्मिक है।

मन्त्र के प्रभाव का आगम प्रमाण

हमारे सामने ऐसे अनेक प्राचीन प्रमाण हैं जिनसे यह सिद्ध होता है कि पौद्विलिक मन्त्र अपनी वर्ण संयोजना, अक्षर विन्यास, मात्राओं तथा ध्वनियों के वैज्ञानिक संयोजन का ऐसा फार्मूला होता था जिसकी शक्ति के प्रभाव से वह मनुष्यों के रोग आदि बाधाओं को भी दूर कर देता था। ध्वला में लिखा है कि योनिप्रभूत में कहे गए मंत्र-तंत्र रूप शक्तियों का नाम पुद्वलानुभाग है-

जोणिपाहुडे भणिदमंत-तंतसत्तीयो पोगलाणुभागो ति घेत्तव्वो।-(ध्वला 13/5, 5, 82/349/8)



ईसा की पहली शती में आचार्य धरसेन ने श्रुत आगम का अवशिष्ट ज्ञान सुरक्षित रखने हेतु पृष्ठदंत-भूतबली इन दो मुनिराजों की परीक्षा मन्त्र सिद्धि के आधार पर ही की थी। उन्हें भी देवियाँ सिद्ध हुई थीं, उनकी अशुद्ध मन्त्र संशोधन की स्वविवेक बुद्धि ही उनकी श्रुत रक्षक की योग्यता का आधार बनी थी। ईसा की दूसरी शती के बाद आचार्य समन्तभद्र ने रत्नकरंड श्रावकाचार में सम्यक्त्व के आठ अंगों की अनिवार्यता के प्रसंग में मन्त्र का उदाहरण देते हुए कहा-

न हि मन्त्रोऽक्षरन्यूनो निहन्ति विषवेदनाम् ॥ (श्लोक २१)

जिस प्रकार किसी मनुष्य को सर्प ने काट लिया और विष की वेदना सारे शरीर में व्यास हो गई तो उस विष वेदना को दूर करने के लिए अर्थात् विष उतारने के लिए मान्त्रिक मन्त्र का प्रयोग करता है। यदि उस मन्त्र में एक अक्षर भी कम हो जाय तो जिस प्रकार उस मन्त्र से विष की वेदना शामित-दूर नहीं हो सकती, उसी प्रकार संसार-परिपाटी का उच्छेद करने के लिए आठ अंगों से परिपूर्ण सम्यग्दर्शन ही समर्थ है, एक दो आदि अंगों से रहित विकलांग सम्यग्दर्शन नहीं-

सर्पादिदृष्टस्य प्रसृतसर्वाङ्गविषवेदनस्य तदपहरणार्थं
प्रयुक्तो मन्त्रोऽक्षरेणापि न्यूनो हीनो 'न ही' नैव 'निहन्ति' स्फोटयति
विषवेदनाम् । ततः सम्यग्दर्शनस्य संसारोच्छेदसाधनेऽष्टाङ्गोपेतत्वं
युक्तमेव.....(आचार्य प्रभाचंद्र की टीका)

गोम्मटसार जीवकांड की जीवतत्त्व प्रदीपिका टीका में स्पष्ट लिखा है कि विद्या, मणि, मंत्र, औषध आदि की अचिन्त्य शक्ति का माहात्म्य प्रत्यक्ष देखने में आता है। स्वभाव तर्क का विषय नहीं, ऐसा वादियों को सम्मत है-

अचिन्त्यं हि तपोविद्यामणिमन्त्रौषधिशक्त्यतिशयमाहात्म्यं
दृष्टस्वभावत्वात् स्वभावोऽतर्कगोचर इति समस्तवादिसंयत्वात् ।

—(गो.जी.184/419/18)

भगवती आराधना की विजयोदया टीका(306/520/17) में अनेक परिस्थितियों में मन्त्र प्रयोग की आज्ञा देते हुए कहते हैं कि जिन मुनियों को चोर से उपद्रव हुआ हो, दुष्ट पशुओं से पीड़ा हुई हो, दुष्ट राजा से कष्ट पहुँचा हो, नदी के द्वारा रुक गये हों, भारी रोग से पीड़ित हो गये हों, तो उनका उपद्रव विद्यादिकों(मंत्रादिकों) से नष्ट करना उनकी वैयावृत्ति है-

स्तेनैरुपद्रूयमाणानां तथा श्वापदैः, दुष्टैर्वा भूमिपालैः,
नदीरोधकैः मार्या च तदुपद्रवनिरासः विद्यादिभिः... वैयावृत्यमुक्तम् ।
पंडित टोडरमल जी भी मोक्षमार्गप्रकाशक(छठवां अधिकार ,पृष्ठ १७१) में मानते हैं कि-

'मंत्रादि की अचिन्त्य शक्ति है'

अतः यह निश्चित हो जाता है कि मन्त्र का प्रभाव बहुत होता है उसका सात्त्विक उपयोग करना जिनागम के विपरीत नहीं है।

मन्त्रों के प्रभाव का वैज्ञानिक प्रमाण

साइंस कॉंग्रेस में टॉप करने वाली एक १४ वर्षीय लड़की अन्वेषा रॉय चौधरी ने कोलकाता के वैज्ञानिकों को ३० के उच्चारण के प्रभाव को सिद्ध करके आश्रय में डाल दिया। उसने प्रमाणित किया कि ३० की ध्वनि थकान को मिटाने में कारगर है। उसने सिद्ध किया कि ३० के लगातार

उच्चारण से रक्त में ऑक्सीजन का स्तर बढ़ता है, कार्बनडायऑक्साइड और लैक्टिक एसिड का स्तर घटता है, जिससे थकान का स्तर भी कम होता है और आप ऊर्जा महसूस करते हैं। एक निश्चित फ्रीकर्वेंसी में ध्वनि का जब उच्चारण होता है, तो उसका प्रभाव हमारे न्यूरोट्रांस्मीटर्स और डोपामाइन जैसे हार्मोंस पर पड़ता है। यह लैक्टिक एसिड के स्तर में भी कमी लाता है, जिससे व्यक्ति को थकान कम महसूस होती है। कोलकाता यूनीवर्सिटी के फिजियोलॉजी डिपॉर्टमेंट के हेड देवाशीष बंदोपाध्याय ने कहा कि अन्वेषा की खोज और उसका प्रोजेक्ट काफी रचनात्मक, बिना किसी दोष के है और उसका आधार भी बेहद ठोस है।(सोर्स-इन्टरनेट)

'३०' प्रणवमंत्र में अरहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय और सर्वसाधु ये पांचों परमेष्ठी समाविष्ट हैं। ऐसे '३०' के जाप्य से, ध्यान से व पूजा से सर्व मनोरथ सफल हो जाते हैं। जैन परंपरा में ओम् का अर्थ है—

अरिहंता असरीरा, आइरिया तह उवज्ञाय मुणिणो।
पद्मक्खरणिष्पणो, ओंकारो पंचपरमिद्वी ॥

(दब्बसंग्गो/४९)

अरिहंत का प्रथम अक्षर 'अ', अशरीर (सिद्ध) का 'अ', आचार्य का 'आ', उपाध्याय का 'उ', और मुनि (साधु) का 'म्' इस प्रकार पंचपरमेष्ठियों के प्रथम अक्षर (अ + अ + आ + उ + म्) को लेकर कातन्त्र व्याकरण के सूत्र 'समानः सर्वर्ण दीर्घी भवति परश्च लोपं' और 'उवर्णं ओ' सूत्र से संधि करने पर 'ओम्' मंत्र सिद्ध होता है। पुनः 'विरामे वा' सूत्र से म् का अनुस्वार होकर '३०' शब्द बनता है।

इसी प्रकार णमोकार महामंत्र का प्रयोग मैंने स्वयं किया। विधिपूर्वक २७ श्वास उच्छवास पूर्वक मात्र ९ बार भाव पूर्ण णमोकार के पाठ से मैंने अपना ऑक्सीजन लेबल कई बार अच्छा किया। ओक्सिमीटर से उसकी जाँच की तो आश्र्वय जनक परिणाम सामने आये। इस महामारी के दौरान अप्रैल २०२१ में जब पूरे देश में मरीजों में ऑक्सीजन की कमी के चलते मौतें हो रहीं थीं तब यह प्रयोग मैंने कई लोगों को बताया और उन्हें इससे प्रत्यक्ष लाभ हुआ। यह प्रत्यक्ष सिद्ध तथ्य है। वर्तमान में मात्र वैज्ञानिक चिंतन करने वाले लोग बिना प्रत्यक्ष प्रमाण के कोई बात नहीं स्वीकार कर पाते हैं इसलिए वे कभी कभी घाटे में भी रहते हैं।

मन्त्र जप की प्रेरणा और विधि

जैन आचार्यों ने पग —पग पर मन्त्र जप की प्रेरणा दी है उसकी विधियाँ भी समझाई हैं। आचार्य योगिंदु कहते हैं कि यदि तुम्हें वास्तव में मोक्ष की इच्छा है तो सम्पूर्ण मन्त्रों के सारभूत, अत्यंत मनोहारी, सुन्दर प्रकाश की राशि, जगत के सभी आराध्यों से भी आराधित होने योग्य अर्हन्त-अक्षर का संयम में स्थित होकर जप करो—

'र्हं' मंत्रसारमतिभास्वरधामपुंजम्, संपूज्य पूजितसमं जपसंयमस्थः।
(कारिका-३३)

इसी प्रकार णमोकार महामंत्र की एक सर्वमान्य विधि पंडित आशाधर जी ने बताई है—

जिनेंद्रमुद्रया गाथां ध्यायेत् प्रीतिविक्स्वरे।
हृतपंकजे प्रवेश्यांतर्निरुद्ध्य मनसानिलम्॥



पृथग् द्विद्येकगाथांशचितांते रेचयेच्छनैः।
नवकृत्वः प्रथौक्तैवं दहत्यंहः सुधीर्महत्॥
(अनगारधर्मामृत/१/२२-२३)

प्राणवायु को भीतर प्रविष्ट करके आनंद से विकसित हृदयकमल में रोककर जिनें द्रुता द्वारा णमोकार मंत्र की गाथा का ध्यान करना चाहिए। तथा गाथा के दो दो और एक अंश का क्रम से पृथक्-पृथक् चिंतवन करके अंत में उस प्राणवायु का धीरे-धीरे रेचन करना चाहिए। इस प्रकार नौ बार प्राणायाम का प्रयोग करने वाला संयमी महान् पापकर्मों को भी क्षय कर देता है। पहले भाग में (श्वास में) णमो अरहंताणं, णमो सिद्धाणं इन दो पदों का, दूसरे भाग में णमो आइरियाणं, णमो उवज्ञायाणं इन दो पदों का तथा तीसरे भाग में णमो लोए सव्वसाहूणं इस पद का ध्यान करना चाहिए।

णमोकार मन्त्र का महत्व

शास्त्रों में इस जिस महामन्त्र की महिमा हजारों प्रकार से गाई गयी है हम उसकी उपेक्षा कैसे कर सकते हैं? उमास्वामी विरचित णमोकार महात्म्य में लिखा है यह मन्त्र सारे भय दूर कर देता है -

संग्रामसागरकरीन्द्रभुजंगसिंह-दुव्र्याधिवन्हिरपुबंधनसंभवानि।
चौरग्रहभ्रमनिशाचरशाकिनीनां, नश्यन्ति पंचपरमेष्ठिपदैर्भयानि॥

(श्लोक ५)

णमोकार मंत्र जपने से युद्ध, समुद्र, गजराज (हाथी) सर्प, सिंह, भयानक रोग, अग्नि, शत्रु, बंधन (जेल आदि) के तथा चोर, दुष्टग्रह, राक्षस चुड़ैल आदि का भय दूर हो जाता है। यहाँ यह ध्यान देने योग्य है कि भय दूर करने की बात है जो श्रावक के मन में मनोवैज्ञानिक रूप से अप्रतिम प्रभाव डालता है।

इसीलिए वे पग पग पर इस मन्त्र पाठ की प्रेरणा देते हुए कहते हैं -

दुःखे सुखे भयस्थाने, पथि दुर्गे रणेपि वा।

श्रीपंचगुरुमन्त्रस्य, पाठः कार्यः पदे पदे॥ (श्लोक १२)

मनुष्य को दुख में, सुख में, भयभीत स्थान में, मार्ग में, वन में, युद्ध में पग-पग पर पंचनमस्कार मंत्र का पाठ करना चाहिए। एक प्राकृत के णमोकार महात्म्य ग्रन्थ में लिखा है (पंडित हीरालाल, अनेकांत त्रैमासिक, जन.-मार्च १२) -

जिणसाणस्स सारो चउदम- पुव्वाङ् जो समुद्धारो ।

जस्स मणे णवयारो संसारो तस्स किं कुण्ड॥ (गाथा-२५)

जिन-शासन के सार और चौदह पूर्व-महार्णव का समुद्धार रूप णमोकार जिसके मन में बसा है, संसार उसका क्या बिगाढ़ लेगा?

निकृष्ट जीवों तक को दुर्गति से बचाने वाला है महामंत्र -

हम प्रथमानुयोग के उन हजारों दृष्टांतों को एक सिरे से झुठला नहीं सकते जिसमें दूसरे के मुख से भी अंत समय में णमोकार मंत्र मात्र सुन लेने से निकृष्ट से निकृष्ट जीव भी दुर्गति से बच गया -

*मरणक्षणलब्धेन येन श्वा देवताऽजनि ।

पञ्चमंत्रपदं जप्यमिदं केन न धीमता ॥

* (क्षत्रचूडामणि ४/१०)

अर्थात् मरणोन्मुख कुत्ते को भी जीवंधर स्वामी ने करुणावश

णमोकार मंत्र सुनाया, इस मंत्र के प्रभाव से वह पापाचारी श्वान देवता के रूप में उत्पन्न हुआ।

जीवंधर स्वामी क्या यह नहीं जानते थे कि “मणि-मंत्र-तंत्र बहु होई, मरते न बचावे कोई”? निश्चित जानते थे और मानते भी थे। उन्हें इस बात पर तनिक भी अश्रद्धान नहीं था कि ‘आयुक्खयेण मरणं’ (वारसाणुवेक्खा, २८) आयु कर्म के क्षय से ही मरण होता है। यदि किसी की आयु आ ही गई है तो उसे बचा कोई भी नहीं सकता। फिर भी सुनाया। क्यों? मुझे नहीं लगता श्वान णमोकार का भाव भी समझता होगा। मात्र शब्द ही उसके कान में गए थे। ऐसे अनेक उदाहरण आपको शास्त्रों में मिल जायेंगे जिसमें ऐसे जीव भी दुर्गति से बच गए जिन्हें इसका भावभासन भी नहीं था। अब इससे हम क्या प्रेरणा लें? हम श्वान और अंजन चोर जैसे तो नहीं हैं। उनसे तो उत्कृष्ट ही हैं, फिर हमारे कान में पड़ जाये तो हम भी दुर्गति से बच जायेंगे? यहाँ उत्कृष्ट और निकृष्ट की परिभाषा तो मैं नहीं करना चाहता किन्तु इतना अवश्य जानता और मानता हूँ कि यहाँ आचार्य यह अवश्य सिखाना चाह रहे हैं कि ‘जब ऐसों का कल्याण हो सकता है तो तुम्हें तो मनुष्य भव, जैन कुल, जिनवाणी का समागम महापुण्य उदय से प्राप्त हुआ है, तुम्हें सिर्फ सुनना नहीं हैं, उसका भाव भी समझना है, पञ्च परमेष्ठी का स्वरूप भी समझना है, उनका ध्यान भी करना है, उनका जप भी करना है, उनके उपदेशों को समझना उसका पालन भी करना है। सिर्फ दुर्गति से बचना ही तुम्हारा एक मात्र उद्देश्य नहीं है बल्कि तुम्हें अपनी शुद्धात्मदशा भी प्राप्त करनी है, इस भव भ्रमण का अभाव भी करना है – समझो।

णमोकार मन्त्र और हमारी असावधानियाँ

णमोकार मन्त्र सबसे अधिक लोकप्रिय तथा सभी के कंठों का हार है। यही मन्त्र है जो उन्हें भी याद है जिन्हें धर्म कार्य में तनिक भी रुचि नहीं है। इस मन्त्र ने अनेक तरह के लोगों को कैसे भी करके धर्म से जोड़कर रखा है। कभी कभी ऐसा भी होता है कि जो वस्तु हमें जन्म से ही सहजता से उपलब्ध है उसकी कीमत हमारे मन में उतनी नहीं रहती जितनी रहनी चाहिए। हम भी अक्सर सस्ती प्रभावना के अतिरिक्त में कैलोण्डर, पेन, लॉकेट आदि अनेक स्थानों पर इसे छाप देते हैं। इस मन्त्र का इतना साधारणीकरण हमने कर दिया है कि कई बार हमें ऐसा लगता है कि इसके पढ़ने से कुछ नहीं होता, हम इससे भिन्न मन्त्रों की तलाश में जुट जाते हैं। कई बार हम इसे शुद्ध रूप में पढ़ना और लिखना भी नहीं जानते हैं। इस अनादर, उपेक्षा और अशुद्धता के पीछे अश्रद्धान भी कारण बन जाता है। हम यह न भूलें कि भले ही पुण्योदय से यह हमें सहज उपलब्ध है किन्तु आज भी उतना ही प्रभावशाली है जितना पहले था। इतना जरूर है कि इस पर श्रद्धान के हमारे स्तर से इसके फल में फर्क जरूर पड़ जाता है। यदि इससे कुछ नहीं होता ऐसा मानकर हम मात्र किसी दबाव में इसका जप करते हैं तो इसके हमारे ऊपर प्रभाव में रुकावट आ सकती है। इसको इस प्रकार सप्तर्णों हम अपने मोबाइल फोन का ब्लूटूथ ऑन करके आपके मोबाइल फोन में डाटा ट्रान्सफर करना तो चाह रहे हैं किन्तु जब तक आप अपना ब्लूटूथ ऑन नहीं करेंगे और रिक्वेस्ट एक्सेप्ट नहीं करेंगे तो डाटा आप के फोन में रिसिव कैसे होगा? इसलिए हमें स्वयं को भी तैयार



रखना आवश्यक है।

सामान्य रूप से अक्सर हम इसका पाठ बहुत जल्दी में कर लेते हैं, न मन्त्र पर ध्यान देते हैं न उसकी विधि पर और न भाव पर। जिस प्रकार औषधि तभी प्रभावक होती है जब वह विधि पूर्वक ली जाय, उसी प्रकार सम्पूर्ण फल के लिए इस मन्त्र का विधि पूर्वक जप करने से ही यह पूर्ण प्रभावक होता है।

यह महामन्त्र स्वयं में निष्काम है, फिर किसी लौकिक कामना से युक्त होकर इस मन्त्र का पाठ करने से इसके प्रभाव में फर्क आता है। इसका पाठ भी निष्काम भाव से किया जाय तब यह ज्यादा प्रभावशाली होता है। निष्काम भाव से ही शातिशय पुण्य संचय होता है। जब हम यह मन्त्र शुद्ध विधि से पढ़ते हैं तो उतने समय तो हम अन्य पाप कार्यों से बचे ही रहते हैं, दूसरा नवीन पुण्य संचय भी होता है तीसरा सम्यक पुरुषार्थ से सत्ता में पड़े हुए पाप कर्म भी पुण्य रूप परिवर्तित हो जाते हैं और स्वास्थ्य आदि अनुकूलताएँ पुण्य के उदय से ही प्राप्त होती हैं। यदि हम कामना पूर्वक यह पाठ करते हैं तो उल्टा पाप बंध का खतरा रहता है। फिर उस पाप के उदय से हमें प्रतिकूलता प्राप्त होती है तो हम 'इससे कुछ नहीं होता' यह दोषारोपण करने लग जाते हैं। इसलिए अधिक लाभ के लिए हमें निष्काम पाठ करना चाहिए।

मंत्र जप का प्रभाव स्वयं जपने से ज्यादा पड़ता है। कर्म विज्ञान के अनुसार जो जपेगा उसकी आत्मविशुद्धि होगी। प्रायः अन्य परंपराओं की देखा देखी यह चलन जैन परंपरा में भी ज्यादा चल पड़ा है कि कोई दूसरा व्यक्ति हमारे लिए हमारा नाम लेकर जप कर ले। किसी परिस्थिति विशेष की बात अलग है, जब व्यक्ति कुछ बोलने पड़ने की हालत में न हो, अत्यंत बीमार हो या मृत्यु के सन्मुख हो तब उसके स्थितिकरण के लिए दूसरों के द्वारा मंत्र पढ़कर उसे सुनाया जाता है। अन्य कोई उपाय नहीं होने की स्थिति में ऐसा किया जाता है। किंतु जप तो स्वयं ही करना श्रेष्ठ है, कोई और जप-तप करे और कर्म हमारे कट जाएं यह संभव नहीं है।

जैन दर्शन अकर्तावादी दर्शन है। वास्तव में एक द्रव्य दूसरे द्रव्य का कर्ता नहीं है, मात्र निमित्त नैमित्तिक सम्बन्ध हैं। वास्तविकता यह है कि हमें न दवा ने ठीक किया, न डॉक्टर ने और इसी प्रकार न किसी मन्त्र ने, हमारा आयुकर्म शेष था सों बच गए अन्यथा ये सब कुछ होते हुए भी अन्य लोग चले क्यों गए? आयु कर्म अन्तर्गत निमित्त है और दवा, डॉक्टर, मन्त्र आदि बहिरंग निमित्त हैं। दवा, डॉक्टर, मन्त्र आदि के निमित्त से स्वस्थ्य हो गए तो इन पर व्यवहार से कर्तापने का आरोप आ जाता है और भाषा हमेशा कर्तापने की होने से संसार में ऐसा कहा जाता है कि दवा ने स्वस्थ्य किया या मन्त्र के कारण हम स्वस्थ्य हुए।

वर्तमान महामारी और महामन्त्र

मैंने ऐसा एक भी मरीज श्रावक नहीं सुना जो सिर्फ मंत्र पाठ कर रहा हो और अपना कोई भी इलाज न करवा रहा हो। 'मणि-मंत्र-तंत्र बहु होई, मरते न बचावे कोई' इसको ऐसे भी कह सकते हैं - *दवा, इलाज बहु होई, मरते न बचावे कोई* बात एक ही है, अभिप्राय यही है कि कुछ भी कर लो मरते

को कोई नहीं बचा पाता है। किन्तु ऐसा कहकर या मानकर भी इलाज कराना अच्छे से अच्छे पंडित जी, विद्वान, तत्त्व-अभ्यासी, भेद-ज्ञानी भी नहीं छोड़ते, किन्तु मंत्र पाठ की निस्सारता जान कर या बता कर, यह अवश्य छूट जाता है। जिस प्रकार रोग का अन्तरंग निमित्त कारण तत्सम्बन्धी कर्म आदि का उदय है फिर भी हम बाह्य उपचार की कोशिश, डॉक्टर, दवाई, वेंटिलेटर आदि के साथ (गारंटी न होते हुए भी) करते ही हैं उसी प्रकार मंत्र का जप, प्रार्थना, ये भी मृत्यु से बचाने की गारंटी न होते हुए भी श्रद्धावानों के द्वारा जपे ही जाते हैं। मैं तो महामन्त्र का जप कभी लौकिक कामना से नहीं करता किन्तु आगम के आधार पर यह श्रद्धान अवश्य है कि -

एसो पंच णमोक्कारो, सव्वपावप्पणासणो।

मंगलाणं च सव्वेसिं, पदमं हवइ मंगलं। (मूलाचार)

यह पंच नमस्कार महामन्त्र सर्व पापों का नाश करनेवाला है। सबके लिए मंगलमय है, तथा सभी मंगलों में प्रथम मंगल है।

श्रावक के द्वारा 'मेरे पापों का नाश हो' - यह कामना कोई पाप तो नहीं है न। इसके साथ साथ भैया भगवती दास जी तो यहां तक कहते हैं कि -

जहां जपेण णमोकार वहां अघ कैसे आवेण।

*जहाँ जपेण णमोकार वहाँ विंतर भग जावेण॥

*जहाँ जपेण णमोकार वहाँ सुख संपत्ति होइ॥

जहाँ जपेण णमोकार वहाँ दुख रहे न कोई ॥

णमोकार जपत नवनिधि मिलें, सुख समूह आवे निकट ।

भैया नित जपवो करो, महामन्त्र णमोकार है ॥

केवल मंत्र पाठ से क्या होगा?

इस पर प्रश्न होने लगता है कि सिर्फ इस जप को करते रहो, कोई शास्त्र स्वाध्याय मत करो, पूजा पाठ मत करो, संयम व्रत उपवास मत करो तो क्या मुक्ति मिल जाएगी? सम्यग्दर्शन हो जाएगा? आत्मानुभूति प्राप्त हो जाएगी? भाई, यह तो हमने नहीं कहा। अरे! इतने अधीर और उतावले क्यों हो रहे हैं? मंत्र जप की प्रेरणा देने का यह अर्थ निकालना भी आपके प्रमाद को ही दर्शा रहा है। हम तो कुछ करने को कह रहे हैं, उसका *अन्य कुछ भी नहीं करना* यह अर्थ क्यों निकाल रहे हैं? दान से मोक्ष होता है - यह उपदेश भी प्रेरणा के लिए दिया जाता है और वास्तविक दान परंपरा से मोक्ष का कारण है भी। कम शब्दों में ऐसे ही कहा जायेगा। विस्तार से बात करें तब विशद विवेचन होगा। इस पर आप यह कहने लगें कि दान से मोक्ष मानना गृहीत मिथ्यात्व है तो हम मिथ्यादृष्टि किसे कहें जो विवक्षा नहीं समझ रहा उसे या जो दान से मोक्ष कह रहा है उसे? इसी प्रकार णमोकार महामन्त्र की साधना के भी अनेक स्तर हैं और जाप प्रारंभिक स्तर है और प्रारंभ हुए बिना तो कोई भी उच्च शिखर को प्राप्त नहीं कर सकता। जैसे दसर्वीं कक्षा का विद्यार्थी पूछे कि क्या मैं दसर्वीं पास करके डॉक्टर बन जाऊंगा तो उसे आगम में प्रेरणा के लिए उत्तर 'हाँ' ही देना होगा, क्यों कि एम्.बी.बी.एस. भी बिना दसर्वीं के तो नहीं कर पायेगा न। शास्त्रों की इस प्रकार की उपदेश शैली की लगातार उपेक्षा करते रहेंगे तो 'माया मिली न राम' वाली स्थिति हो जाएगी।



अंतिम में शरण क्या है ?

कविवर जयचंद लिखते हैं – शुद्धात्म अरु पंचगुरु ,जग में सरणों दोय (अशरण भावना) अर्थात् इस जगत में अपनी शुद्धात्मा और पञ्च परमेष्ठी ये दो ही एक मात्र वास्तविक शरण हैं। अब जिस गुणस्थान की भूमिका में मरीज है उसमें वह अपनी शुद्धात्मा की कामना तो कर सकता है किन्तु चाहकर भी शरण ग्रहण नहीं कर पाता है तो शुद्धात्मा की ओर ले जाने वाले स्वयं शुद्धात्म स्वरूप पञ्च परमेष्ठी ही उसकी एक मात्र शरण बचते हैं। अतः मरीज को नमस्कार महामंत्र के माध्यम से उनकी शरण प्राप्त होती है और उसका मनोबल मजबूत होता है। ये भी एक थेरेपी है जो श्रद्धा के कारण मरीज के शरीर में अन्तःसाक्षी ग्रंथियों से सकारात्मक रासायनिक स्राव करता है जिससे उसकी चेतना सकारात्मक उर्जा से भर जाती है ,उसका मनोबल मजबूत होता है और वह उपस्थित सभी विपदाओं का सामना करने की सामर्थ्य प्राप्त कर लेता है और यदि आयु शेष है तो वह जल्दी स्वस्थ भी हो

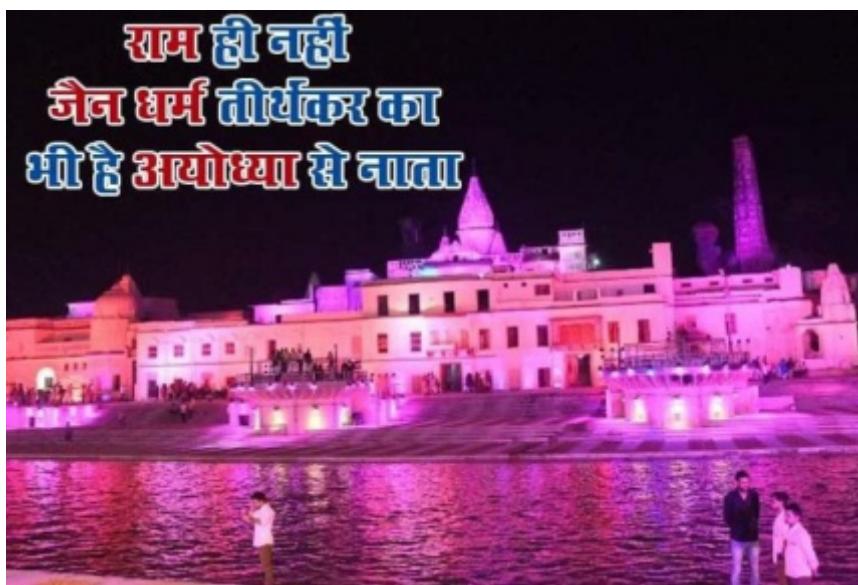
जाता है साथ ही पञ्च परमेष्ठी के वास्तविक स्वरूप का चिंतवन करने से उसकी कषाय मंद होती है और उसे मानसिक और आत्मिक शांति दोनों प्राप्त होती है।

वर्तमान में महामारी के इस विपत्ति काल में ICU में वेंटिलेटर पर जीवन संघर्ष करते हुए श्रावक को यदि मन की शांति ,मनोबल और आत्म विशुद्धि के लिए महामंत्र जाप की प्रेरणा यदि दी जा रही है और *अन्यथा शरणं नास्ति, त्वमेव शरणं मम* की भावना से वह अंदर ही अंदर महामंत्र का मानसिक जप भी कर रहा है तो उसको हर तरफ से लाभ ही लाभ है। जीवन रहा तो भी और नहीं रहा तो भी। अतः मेरा निवेदन है कि हमें जिनागम के आलोक में सर्वांगीण चिंतन करना चाहिए और उभय अतिवाद से बचना चाहिए। मन्त्रों के साधक अध्यात्म और विज्ञान से दूर न हों और विज्ञान तथा अध्यात्म के चिन्तक मन्त्र के महत्त्व को एक सिरे से न नकारें –यही मंगल भावना है।



समाचार

**राम जन्मभूमि पर भव्य मंदिर निर्माण की तैयारी के साथ जैन तीर्थकरों की विरासत भी होगी रोशन
रामनगरी अयोध्या के दिगंबर जैन मंदिर में संग्रहालय एवं प्रेजेन्टेशन हाल के लिए शासन ने स्वीकृत कर रखी है 4.43 करोड़ की राशि**



अयोध्या को दुनिया की सर्वश्रेष्ठ पर्यटन एवं तीर्थ नगरी के रूप में विकसित किए जाने की शासकीय योजना में जैन परंपरा को प्रतिष्ठित-संयोजित करने का भी ध्यान रखा गया है। इस क्रम में अयोध्या स्थित दिगंबर जैन मंदिर में विशाल संग्रहालय एवं प्रेजेन्टेशन हॉल के निर्माण का प्रस्ताव स्वीकृत है और इसके लिए प्रदेश सरकार ने चार करोड़ 43 लाख की राशि भी मंजूर कर दी है। हालांकि, कोरोना संकट के चलते इस प्रस्ताव पर अमल लंबित हो रहा है। स्थानीय दिग्‌जॉड़ जैन मंदिर के प्रबंधक मनोज जैन के अनुसार दिगंबर जैन मंदिर अयोध्या तीर्थक्षेत्र कमेटी की बैठक लंबे समय से अपेक्षित है। कोरोना संकट के चलते कमेटी के पदाधिकारी एकत्र नहीं हो पा रहे हैं। उन्होंने संभावना

जताई कि इसी माह के अंत तक कमेटी की बैठक कर ली जायेगी। इसमें कमेटी के अध्यक्ष पीठाधीश स्वामी रवीन्द्रकीर्ति जी प्रमुख रूप से शामिल होंगे और उन्हीं की अध्यक्षता में शासन के सहयोग से प्रस्तावित विकास योजनाओं के अमल पर अंतिम रूप से विचार किया जाएगा।

सैद्धांतिक तौर पर इस योजना के लिए पहले ही सहमति बन चुकी है और योजना के लिए विकास प्राधिकरण शुरुवाती सर्वे भी करा चुका है। गत वर्ष प्रस्ताव मार्गे जाने पर कमेटी ने संग्रहालय और प्रेजेन्टेशन हाल के अलावा अयोध्या के सभी पांच तीर्थकरों की जन्मभूमि से जुड़ते मार्गों पर स्वागत द्वार बनाए जाने की अपेक्षा जताई थी। संग्रहालय क्रष्णभद्र दिगंबर जैन मंदिर में स्थापित गर्भगृह के दाहिनी और की 15 हजार वर्ग फीट भूमि पर प्रस्तावित है। संग्रहालय में प्राचीन जैन मूर्तियां, विशेष रूप से अयोध्या में जन्मे तीर्थकरों की दुर्लभ प्रतिमाएं, उनसे जुड़े साहित्यिक साक्ष्य और उनके उपदेशों को सहेजे जाने की योजना है।

रामनगरी अयोध्या में हुआ पांच तीर्थकरों का जन्म : जैन परंपरा के 24 तीर्थकरों में से पांच का जन्म अयोध्या में ही हुआ था। यहां जन्म लेने वाले तीर्थकरों में प्रथम क्रष्णभद्र, दूसरे अजितनाथ, चौथे अभिनंदननाथ, पांचवे सुमतिनाथ, एवं 14वें अनंतनाथ हैं। प्रथम तीर्थकर की 'जन्मभूमि पर आठ एकड़ में विस्तृत विशाल मंदिर है और इसी मंदिर के 'परिसर में संग्रहालय एवं प्रेजेन्टेशन हाल प्रस्तावित है। अन्य तीर्थकरों की जन्मभूमि आकर्षक मंदिरों से सुसज्जित है।





आगम में चातुर्मास स्थापना

- प्रतिष्ठाचार्य श्री विजय कुमार जैन



जैन मुनि, आर्थिका, क्षुल्लक और क्षुल्लिका आदि चतुर्विधि संघ वर्षा क्रतु में एक जगह रहने का नियम कर लेते हैं, अन्यत्र विहार नहीं करते हैं इसलिए इसे वर्षायोग कहा है तथा सामान्यतया श्रावण, भाद्रपद, आश्विन और कार्तिक इन चार महीने पर्यंत एक जगह रहना होता है अतः इसे चातुर्मास भी कहते हैं।

वर्षायोग स्थापना क्यों की जाती है ?

वर्षा क्रतु के आने पर सूक्ष्म जीवों की उत्पत्ति अत्यधिक हो जाती है। जिसके कारण जैन सन्त जो कि सूक्ष्म से सूक्ष्म हिंसा का ध्यान देते हैं कि उनके द्वारा किसी भी प्रकार के जीव को बाधा ना पहुँचे या उनकी विराधना न हो, लेकिन बहुत से जीव इस समय ऐसे उत्पन्न हो जाते हैं जो कि आँखों के द्वारा दिखते नहीं हैं। कितनी भी सावधानी से क्रिया करने पर उन जीवों की हिंसा होती है, इसलिये सन्तगण चार महीने एक ही स्थान पर रहकर के विधिवत अपनी चर्चा का पालन करते हैं एवं जिस स्थान पर चौमासें की स्थापना होती है वहाँ के समाज को भी धर्म लाभ होता है। सन्तों के द्वारा बड़े-बड़े अनुष्ठान के आयोजनों की प्रेरणा प्राप्त होती है और उनके ही सानिध्य में खूब भक्तिपूर्वक पूजन विधान आदि के कार्यक्रम सम्पन्न होते हैं। आगम के अनुसार चातुर्मास के लिए कम से कम १०० दिन या १६५ दिनों की व्यवस्था है।

वर्षायोग ग्रहण करने के पहले एक महीने तक वहाँ पर रहकर वर्षाकाल में योग ग्रहण करना चाहिए तथा योग को समाप्त करके एक महीने तक वहाँ रहना चाहिए ऐसा क्यों ? तो लोकस्थिति को समझने के लिए और अहिंसा आदि व्रतों के परिपालन हेतु पहले एक मास तक रहने का विधान है तथा श्रावकजनों के संक्लेश आदि को दूर करने के लिए वर्षायोग समाप्ति के अनंतर भी एक महीने तक वहाँ रहने का विधान है। इससे अभिप्राय यह है कि यदि साधु को जहाँ पर चार मास का समय व्यतीत करना है वह स्थान वहाँ के समाज, वहाँ की जलवायु, संघ के उपयुक्त है कि नहीं ? हमारे संयम में किसी प्रकार की बाधा तो नहीं आएंगी। इस बात का निरीक्षण एक महीने पूर्व पहुँचने से सभी बातों का निरीक्षण हो जाता है। जिससे धर्मध्यान आराधना पूर्वक संघों का समय व्यतीत होता है, जो समाज के लिए लाभकारी है।

वर्षाकाल में चार महीने एक जगह रहना, भ्रमण का त्याग करना, इसका अर्थ है। चूँकि वर्षाकाल में यह पृथ्वी स्थावर और त्रस जीवों से सहित हो जाती है, ऐसे समय में यदि मुनि विहार करंगे तो महान असंयम होगा अथवा जलवर्षा और शीत हवा के निमित्त से उनकी आत्मा का विघात होगा अर्थात् रोग आदि हो जाने से अपघात आदि हो सकता है। इस मौसम में पृथ्वी पर जल की बहुलता होने से कहीं पर यदि जल के गड्ढे आदि ढके हुये हैं—ऊपर से नहीं दिख रहे हैं, उन पर धास या रेत आदि पड़ गयी है, उन गड्ढों पर पैर पड़ जाने से उनमें गिरने आदि की संभावना हो सकती है अथवा पैर आदि फिसल जाने से कहीं भी बाबड़ी—गड्ढे आदि में पड़ सकते हैं अथवा ठूंठ, कॉट आदि से या जलवृष्टि से भी बाधा हो सकती है इत्यादि दोषों से बचने के लिए एक सौ बीस दिन तक एक स्थान पर रहना, यह उत्सर्ग नियम है। कारणवश इससे कम या अधिक दिवस भी निवास किया जाता है।

महामारी रोग के हो जाने पर, दर्भिक्ष के आ जाने पर, ग्राम के अथवा देश के लोगों का अपना स्थान छोड़कर अन्यत्र जाने का प्रसंग आ जाने पर, संघ के

विनाश होने के निमित्तों के उपस्थित हो जाने पर इत्यादि कारणों से मुनि वर्षायोग में भी अन्यत्र जा सकते हैं। यदि वे वहीं पर रहते हैं तो रत्नत्रय की विराधना हो जाएगी इसलिये आषाढ़ सुदी पूर्णिमा के व्यतीत हो जाने पर भी प्रतिपदा आदि तिथि में वे अन्यत्र चले जाते हैं अर्थात् "प्रतिपदा" से चतुर्थी तक चार दिन में कहीं अन्यत्र योग्य स्थान में पहुँच सकते हैं इसलिए एक सौ बीस दिनों में बीस दिन कम किए जाते हैं। इस तरह काल की हीनता का विधान है।

चातुर्मास के दिनों में विशेष कारणवश साधुओं को विहार करने की आगम आज्ञा—

चातुर्मास में साधु विशेष धर्मकार्य या सल्लेखना आदि निमित्त से अड़तालीस कोश तक विहार कर सकते हैं। स्पष्टीकरण—वर्षा क्रतु में देव और आर्ष संघ संबंधी कोई बड़ा कार्य आ जाने पर यदि साधु बारह योजन तक चला जाए, तो कोई दोष नहीं है। अर्थात् चातुर्मास में यदि कहीं अन्यत्र किसी साधु ने सल्लेखना ग्रहण कर ली है अथवा और कोई विशेष ही कार्य है तो साधु बारह योजन अर्थात् एक योजन में चार कोश होने से $12 \times 4 = 48$ कोश तक विहार करके जा सकता है।

वर्षायोग में समाज को लाभ

इस चातुर्मास काल के अन्दर संतों का जहाँ विराजना होता है वहाँ पर प्रायः धर्म की गंगा बहती है, प्रत्येक दिन उत्सव और महोत्सव पूर्वक दिखते हैं, चातुर्मास स्थापना के दूसरे दिन गुरु पूर्णिमा आती है एवं उसे लोग भक्तिपूर्वक मनाते हैं, रक्षा बन्धन का महापर्व संतों के सानिध्य में मनाते हैं एवं उसका महत्व समझते हैं, जो कि सिर्फ भाई बहन के त्योहार तक ही सीमित है लेकिन उन संतों के माध्यम से उसका धार्मिक महत्व भी समझते हैं एवं सबसे महत्वपूर्ण दशलक्षण महापर्व भादों के महीने में आता है जिसमें प्रत्येक दिवस अपने आप में एक उत्सव है अनेक स्थानों पर प्रश्नमंच एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम मनाये जाते हैं जो कि पर्व के दिनों का महत्व बताने के लिए किया जाता है। इसी प्रकार से नौ रात्रों के नो दिनों कहीं ना कहीं कोई ना कोई विधान आदि का अनुष्ठान भी चलता है। इसी क्रम में भगवान महावीर के निर्वाण उत्सव को भी भक्तिपूर्वक मनाते हैं, और कार्तिक की अष्टाहिन्द्रियों में सिद्धचक्र आदि विधान का भी आयोजन करते हैं। तो ये चार महीने कब आते हैं, कब चले जाते हैं इसका पता ही नहीं चलता है।

चातुर्मास स्थापना का सम्बन्ध सिर्फ साधु के लिए ही नहीं अपितु समाज के लिए भी एक सुन्दर अवसर है, जब अपने बच्चों में धार्मिक संस्कार आते हैं। साधुओं के द्वारा इन चार महीनों में शिविर पाठशाला आदि जो चलाई जाती हैं उससे समाज के हर वर्ग के व्यक्ति को लाभ मिलता है एवं अभिषेक करना दर्शन करना, आहार देना, साधुओं की विनय करना एवं उनकी चर्चा को देखने का अवसर प्राप्त होता है। जो कि हमारे जीवन में बहुत महत्वपूर्ण समय होता है। यह संस्कार हमें उन्नति के पथ पर ले जाने में सहायक होते हैं एवं धार्मिक और सामाजिक ज्ञान भी देते हैं।





षट्खण्डागम ग्रन्थ तृतीय होते हुए भी प्रथम कैसे?

प्रशममूर्ति आचार्य श्री 108 शांतिसागर जी महाराज (छाणी) परंपरा के प्रमुख संत परम पूज्य आचार्य श्री 108 अतिवीर जी मुनिराज के परम पावन सान्निध्य में जैन दर्शन के महत्वपूर्ण पर्व श्रुतपंचमी के पुनीत प्रसंग पर ऑनलाइन ज्ञानवर्धक विद्वत् संगोष्ठी का आयोजन रविवार, दिनांक 13 जून 2021 को ऐतिहासिक रूप से सानंद संपन्न हुआ। जैन

दर्शन के मूर्धन्य विद्वानों ने विभिन्न विषयों पर तर्कसंगत व आगम सम्मत वक्तव्य प्रस्तुत किये। संगोष्ठी का आयोजन जैन यूथ काउन्सिल (दिल्ली प्रदेश) के तत्वावधान में तथा सञ्चालन श्री शरद जैन (सांध्य महालक्ष्मी) द्वारा किया गया। पं. संदीप जैन शास्त्री (दिल्ली) ने मंगलाचरण के माध्यम से जैन वांगमय में मुनियों के उपकार का वर्णन करते हुए संगोष्ठी का शुभारम्भ



zoom

किया। आचार्य श्री के प्रवास स्थल अशोक विहार फेज-2 जैन समाज द्वारा जिनवाणी विराजमान व दीप प्रज्जवलन किया गया। श्रुत पंचमी (प्राकृत भाषा दिवस) व प्राकृत भाषा की उपयोगिता पर वक्तव्य प्रस्तुत करते हुए डॉ. अनेकांत जैन (दिल्ली) ने कहा कि आगम को मूल रूप में सुरक्षित करने के लिए प्राकृत भाषा का ज्ञान और

उन गाथाओं को कंठस्थ करने की परंपरा उसी प्रकार बहुत आवश्यक है जिस प्रकार वैदिक वेद पाठ कंठस्थ करके उसे सुरक्षित करते हैं। इसी उद्देश्य से श्रुत पंचमी के दिन को प्राकृत भाषा दिवस के रूप में भी मनाया जाता है। श्रुत परंपरा तभी सुरक्षित रहेंगे जब उसकी भाषा सुरक्षित रहेगी।

श्री षट्खण्डागम ग्रंथराज का महत्व बताते हुए प्रो. वृषभ प्रसाद जैन (लखनऊ) ने कहा कि वर्तमान में श्री षट्खण्डागम ग्रंथराज दिग्म्बर परम्परा में प्राप्त श्रुत का प्रथम प्रमाणिक व लिखित मूलाधार है, जिसे प्रभु की वाणी का प्रथम उपलब्ध लेख-रूप भी कह सकते हैं। यही सुदेव की पहचान कराता है और सुगुरु की भी, क्योंकि सुशास्त्र या सुश्रुत की प्रमाणिक परंपरा ही तो उभय दीपक है और कसौटी भी इसीलिए षट्खण्डागम की परंपरा पर ही देव और गुरु की प्रमाणिकता की परंपरा टिकी है और यही हमारी वैचारिक परंपरा का प्रथम लेखीय प्रतीक है, जो हमारे अस्तित्व की प्रथम लेखीय पहचान भी है। इसलिए इसका संरक्षण, पोषण और पल्लवन हम-सब का प्रथम कर्तव्य भी होना चाहिए।

श्रुतपंचमी पर्व मनाने की उत्तम विधि पर प्रकाश डालते हुए डॉ. वीर सागर जैन (दिल्ली) ने कहा कि केवल जिनवाणी को सजाना, पालकी यात्रा निकालना, अष्ट-द्रव्य से पूजन करना और फिर पुनः अलमारी में विराजमान कर देना मात्र श्रुतपंचमी पर्व नहीं है। इस महापर्व की सार्थकता तभी होगी यदि आज के दिन हम स्व-पर कल्याण हेतु कुछ ठोस व आवश्यक कार्य करने का उद्यम करेंगे। सर्वप्रथम तो हम सभी को प्रतिदिन किसी मूल आगम ग्रन्थ का विशुद्ध आत्महित की भावना से स्वाध्याय करना चाहिए। हम उत्सव तो मना लेते हैं, ग्रन्थ की पूजा आदि भी कर लेते हैं परन्तु कभी उन्हें खोलकर देखते तक नहीं। आज के दिन हमें जिनवाणी को व्यापक स्तर पर विश्व में पहुँचाने का उद्यम भी अवश्य करना चाहिए। जैन साहित्य को जैनेतर विद्वानों, शोधार्थियों, वैज्ञानिकों, राजनेताओं आदि तक पहुँचाने की नितांत





आवश्यकता है।

श्रुतरक्षा के उपाय पर अपने विचार प्रस्तुत करते हुए डॉ. श्रेयांस कुमार जैन (बड़ौत) ने कहा कि आचारंग आदि बारह अंग उत्पाद पूर्व आदि चौदह पूर्व और सामायिकादि चौदह प्रकीर्णक का शब्दात्मक रूप से जानना द्रव्यश्रुत है। द्रव्यश्रुत के सुनने से उत्पन्न जो ज्ञान है सो भावश्रुत है। श्रुतज्ञान केवलज्ञान के सदृश होता है। इन्द्रिय व प्रकाश आदि के द्वारा जो ज्ञान होता है, व परोक्ष है तथा इन्द्रिय आदि की सहायता के बिना आत्मा के द्वारा जो पदार्थ ज्ञान है, वह प्रत्यक्ष है। श्रुतज्ञान ही द्रव्यश्रुत व भावश्रुत का बोधक है। श्रुत का रक्षण श्रुताभ्यास से ही संभव है। शास्त्रों का स्वाध्याय करना-करवाना तथा चिंतन-मनन करना ही श्रुतरक्षा का उपाय है। द्रव्यश्रुत और भावश्रुत केवलज्ञान का निमित्त है अतः उनकी संरक्षण आत्मा का महान उपकार है।

पं. ऋषभ जैन शास्त्री (वसुंधरा) ने स्वाध्याय का महत्व बताते हुए कहा कि जिनागम में स्वाध्याय को परम तप कहा है क्योंकि इसके बिना अन्य तर्पों की जानकारी भी सम्भव नहीं है। स्वाध्याय द्वारा कषाय मन्द होती हैं, सातिशय पुण्य का बंध होता है, ज्ञानधन का संचय होता है, सभी लौकिक कार्य सहज सिद्ध होते हैं, स्वर्ग सुख और अंत में परम्परा से मोक्ष सुख की प्राप्ति होती है। सबसे बड़ी बात है कि स्वाध्याय से मुझे ही मेरी पहचान होती है। ठीक ही कहा है स्वाध्याय बिना नर तिर्यच समान है। प्रधानता से जिसकी सुलभता मात्र मनुष्य गति में ही है ऐसे स्वाध्याय से हम भी अपने दुखों का भव का अभाव करें।

संगोष्ठी के मध्यस्थ पं. आशीष जैन शास्त्री (मथुरा) द्वारा आध्यात्मिक भजन की प्रस्तुति दी गयी। अंत में आचार्य श्री 108 अतिवीर जी मुनिराज

ने अपनी मंगलमयी वाणी से श्रोताओं को लाभान्वित करते हुए कहा कि श्रुतपंचमी श्री षट्खण्डागम ग्रंथराज की पूर्णता का उत्सव है। आचार्य धरसेन जी ने अपने शिष्यों श्री पुष्पदत्त-भूतबलि जी को जिनागम का ज्ञान दिया जिसे उन्होंने लिपिबद्ध किया। आज के दिन श्री जिनवाणी माँ की आराधना का पर्व है। आचार्य श्री ने आगे कहा कि हमें शास्त्र मिल गया, हमने पूजा-अर्चना भी कर ली परन्तु इससे हमारे जीवन में क्या परिवर्तन आया, यह सोचना होगा। स्वाध्याय के माध्यम से जब हम स्वयं का दर्शन कर लेंगे तो फिर प्रतिदिन हमारे जीवन में वास्तविक श्रुतपंचमी मनेगी। हमारे अंतःकरण की जाग्रति जिस दिन हो जाएगी उस दिन वह हमारी स्वयं की श्रुतपंचमी होगी। आचार्य श्री ने आगे कहा कि श्री षट्खण्डागम ग्रंथराज की पूर्णता पर आज हम श्रुतपंचमी महापर्व मना रहे हैं। परन्तु इससे पहले दो शास्त्र - कषायपाहुड व योनिपाहुड भी लिपिबद्ध हुए थे, तो ये उत्सव मात्र षट्खण्डागम के लिए ही क्यों? ऐसा क्या कारण है कि पहले के दो शास्त्र को छोड़कर हमने तीसरे शास्त्र को ही प्रथम लिपिबद्ध कह दिया, यह विचारणीय है। आचार्य श्री ने कहा कि वर्तमान में जिनालयों व जिनबिम्बों की तो बहुलता है परन्तु श्रुत मंदिर का अभाव होने लगा है। प्राचीन समय में बड़े-बड़े आश्रम, बड़े-बड़े विद्यालय स्वाध्यायप्रेमियों के लिए स्थापित किये गए थे जहाँ जैन दर्शन के गूढ़ रहस्यों को समझने का प्रयास निरंतर चलता रहता था। परन्तु वर्तमान में ऐसे स्थान कहीं देखने को नहीं मिलते। जैन समाज में स्वाध्याय के प्रति उदासीनता का भाव आने लगा है। इसके लिए हम सभी जिम्मेदार हैं चाहे साधु हो, या विद्वान हो या श्रावक। हर तरफ बाहरी क्रियाओं की चर्चा तो होती है परन्तु अंतरंग यात्रा का विषय गौण होने लगा है।



समाचार

तीर्थक्षेत्र कमेटी महाराष्ट्र अंचल के पदाधिकारियों ने सांसदों से किया निवेदन दौलताबाद किले के पास मिली हुई ७ दिंगंबर जैन गुफाओं को जल्द ही समाजगण के सामने लाया जाये



भारतीय जनता पार्टी के राज्यसभा सांसद वरिष्ठ नेता श्री. डॉ. भागवतजी

कराड औरंगाबाद एवं औरंगाबाद लोकसभा मतदार संघ के सांसद श्री इमितवाज जलील साहब को महाराष्ट्र तीर्थक्षेत्र कमेटी के अध्यक्ष श्री संजयजी पापडीवाल, वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री लतितजी पाटणी, कोषाध्यक्ष श्री विनोदजी लोहाडे, महामंत्री श्री भरतजी ठोड़े ने दौलताबाद किले के पास मिली हुई ७ दिंगंबर जैन गुफाओं के बारे विस्तृत जानकारी दी। तथा उनसे यह निवेदन किया की यह ७ गुफाओं को जल्द ही समाजगण के सामने लाया जाये। इस संबंध में अर्कोलॉजी विभाग दिल्ली एवम् औरंगाबाद से बात करवा कर गति प्रदान करने हेतु विनंती की। अर्कोलॉजी व महाराष्ट्र अंचल तीर्थक्षेत्र कमेटी पदाधिकारी की संयुक्त बैठक ली जाये ऐसी मांग की। दोनों ही सांसद महोदय ने जल्द ही संयुक्त बैठक करवाने के संबंध में तथा इस पर चर्चा करके दिंगंबर जैन गुफाओं को जल्द खुलवाने संबंधी कार्यवाही करने का आश्वासन दिया।





श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र नेमगिरि जिंतुर

- सुजीत राजकुमार खोलापुरे, पनवेल

श्री नेमगिरि सुक्षेत्र पर, अतिशय भारी जान
अंतरिक्ष श्री पार्श्वकी, अगम अनोखी शान।

भूमिका

श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र नेमगिरि महाराष्ट्र मराठवाड़ा के परभणि जिले में जिंतूर से उत्तर दिशा की ओर 3 किलोमीटर की दूरी पर प्राकृतिक सौंदर्य से युक्त सह्याद्री पर्वत की उप श्रेणियों में बसा हुआ है। पहला पर्वत श्री नेमगिरि जी और दूसरा श्री चंद्रगिरि जी के नाम से जाना जाता है। दोनों पर्वतराज के बीचों-बीच युगल चारणऋद्धि धारी मुनियों की चतुर्थकालीन अति प्राचीन चरण पादुकाएँ विराजमान हैं। भगवान महावीर का समवशरण चंद्रगिरि पर्वत पर आया था। यहाँ की अतिप्राचीन मूर्ति शिल्प कला मोहलेती है।

नेमगिरि

पहाड़ी के 17 फीट अंदर भूमध्य में सात गुफाओं में छोटे-छोटे दरवाजों से युक्त एवं विशाल जिनबिंबों से युक्त यह क्षेत्र अत्यंत ही मनोज्ञ है। यह गुफाएँ प्राचीन वास्तुशिल्प का अद्भुत उदाहरण हैं। गुफाओं की रचना चक्रव्यूहकार है। गुफा क्रमांक १ में 3.5 फीट ऊँची काले पाषाण की पद्मासन मुद्रा में भगवान महावीर स्वामी की मनोज्ञ प्रतिमा है। मूर्ति के दाहिनी ओर ढाई फीट ऊँची खड्गासन मुद्रा में पञ्चालयित प्रतिमा है। इस वेदी पर अंतिम श्रुतकेवली आचार्य भद्रबाहु जी और चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज के चरण विराजमान हैं। गुफा क्रमांक २ में कला कौशल से युक्त कर्ण तक केशलताओं से व्याप्त कठोर तपसाधना के प्रतीकात्मक पद्मासन मुद्रा में भगवान आदिनाथ की प्रतिमा है। गुफा क्रमांक ३ में परम शांतिदायक श्री शांतिनाथ भगवान की 6 फीट ऊँची पद्मासन प्रतिमा है। गुफा क्रमांक ४ में क्षेत्र के मूलनायक भगवान श्री नेमिनाथ की अत्यंत मनोज्ञ अतिशयकारी 7.5 फीट ऊँची विशाल प्रतिमा विराजमान है। काले पाषाण की इस प्रतिमा के दर्शन करते ही साधक भावविभोर हो जाते हैं। वेदी पर जीर्णोद्धारक श्री वीर संघवी तथा उनके पुत्रत्रय श्री नेमा, साधु एवं अंतू संघवी सपत्नीक वंदना मुद्रा में अंकित हैं। वेदी पर दायें और बायें अंकित सिंह को देखने में ऐसा प्रतीत होता है कि इनका निर्माण राष्ट्रकूट वंशीय राजा अमोघवर्ष के हाथों या उनके समकालीन राजाओं द्वारा हुआ होगा। इसी वेदी पर राष्ट्रकूट वंश का राजचिन्ह अंकित है।

गुफा क्रमांक ५ में ओंकारवर्त भव्य फणायुक्त एवं सुंदर मनोज्ञ अंतरिक्ष श्री पार्श्वनाथ भगवान की 6.5 फीट ऊँचाई वाली प्रतिमा विराजमान है। प्रतिमा का वजन लगभग 9 टन है इसी प्रतिमा को भद्रबाहु आचार्य ने सूरीमंत्र दिया था। इसी प्रतिमा के सामने भद्रबाहु आचार्य ने उपसर्गहर पार्श्वनाथ स्तोत्र की रचना की थी। कामधेनु, कल्पवृक्ष, चिंतामणि के समान मनोवांछित फल देने वाली इस अप्रतिम प्रतिमा के दर्शन करने मात्र से शारीरिक, मानसिक एवं समस्त सांसारिक दुखों से क्षण मात्र में ही मुक्ति प्राप्त होती है। गुफा क्रमांक ७ में 4.5 फीट ऊँचाई वाली खड्गासन मुद्रा में चतुर्मुख जिनबिंब है इसे लोग



नंदीश्वर के नाम से पूजते हैं किंतु यह जिनबिंब ठीक मूलनायक भगवान नेमिनाथ जी के सामने होने से एवं नीचे से लगभग 16.5 फीट ऊँचा होने से मानस्तंभ की रचना का प्रतीक है। गुफा क्रमांक ७ में भगवान बाहुबली की ध्यानस्थ मुद्रा में लता एवं कंधों पर सर्पयुक्त विश्व की अनोखी प्रतिमा है।

चंद्रगिरि पर्वत

चंद्राकार चंद्रगिरि पर्वत पर स्थित जिनालय में 24 तीर्थकरों से समन्वित शांतिनाथ, कुंथुनाथ, अहनाथ भगवान की खड्गासन जिन प्रतिमाएँ विराजमान हैं। प्रतिमा 5.5 फीट ऊँची और 4 फीट चौड़ी है। इस प्रतिमा की विशेषता यह है कि इसमें भगवान बाहुबली की लता एवं सर्प युक्त प्रतिमा, भरत चक्रवर्ती की हाथ जोड़ कर निर्ग्रथ मुद्रा की प्रतिमा, गणधर पादुका, चारणऋद्धिधारी मुनियों की चरण पादुका, चार अनुयोग एवं पांच परमेष्ठी के प्रतीक चिन्ह उत्कीर्ण हैं।

13वीं शताब्दी में यवनों के आक्रमण के कारण यहाँ के 13 जैन मंदिर खंडहर हो गए तत्पश्चात् 13वीं शताब्दी में नांदगांव निवासी बघेरवाल जाति के श्री वीर संघवी और उनके पुत्रत्रय श्री नेमा, साधु और अंतू ने इस क्षेत्र का जीर्णोद्धार करके पूर्ववत् रचना करने का प्रयास किया। आज भी उन्हीं के वंशज कलमकर (सावजी) परिवार के सदस्य वंश परंपरा से क्षेत्र का कार्यभार संभालते हुए पूरे समाज को साथ लेकर क्षेत्र विकास के कार्य में अग्रसर हैं। क्षेत्र का वातावरण अत्यंत पवित्र, स्वच्छ व निर्मल है। जलवायु प्रकृति के अनुकूल होने से साधकों एवं श्रावकों को साधना हेतु अति उपयोगी है।



त्यागीन्नती और मुनियों के लिए यह क्षेत्र ध्यान अध्ययन हेतु अति उत्तम है। पैठणकर ने पूजा में लिखा है कि

“नेमिनाथ गिरि नेम, निवासी नेमीश्वर भाया
सातिशय से देखते मूर्ति को, सफल हुई काया”

सीहोर में मिली 23वें तीर्थकर भगवान पार्श्वनाथ जी की अति प्राचीन प्रतिमा



सीहोर मध्यप्रदेश/ राजधानी भोपाल के नजदीक सीहोर जिले की सीवन नदी के किनारे चौधरी घाट पर 23वें तीर्थकर भगवान पार्श्वनाथ जी की सर्वांग सुंदर प्रतिमा प्राप्त हुई हैं।

सीहोर शासकीय महाविद्यालय में प्रोफेसर श्री गणेशी लाल जैन व जैन समाज के अध्यक्ष श्री अजय जैन ने बताया कि प्रतिमाजी को चौधरी घाट से उठाकर श्री

वार्षिक मेला व मुख्य पर्वों आयोजन

क्षेत्र पर प्रतिवर्ष भाद्रपद पंचमी को वार्षिक मेला होता है। श्रावणसुद छठ को भगवान नेमिनाथ जी के जन्म कल्याणक के दिन क्षेत्र पर पूजा का विशेष आयोजन होता है। श्रावणसुद सप्तमी को भगवान पार्श्वनाथ जी का मोक्ष कल्याणक मनाया जाता है। परम पूज्य आचार्य देवनंदी जी महाराज जी की प्रेरणा एवं मंगल आशीर्वाद से 21 कमरे पाँच हाँल सभी सुविधा संपन्न यात्री निवास का कार्य पूर्ण हुआ है। सभी आधुनिक सुविधाओं से युक्त नवनिर्मित ४ एसी कक्ष यात्रियों के निवास हेतु उपलब्ध हैं।

श्री विघ्नहर नेमिनाथ गौशाला

परम पूज्य संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराजजी के मंगल आशीर्वाद से एवं उन्हीं के शिष्य परम पूज्य श्री समाधि सागर जी महाराज जी की प्रेरणा से श्री विघ्नहर नेमिनाथ गौशाला की स्थापना सन 2000 में हुई थी। कसाईखाने जाने वाले गोवंश का पालन इस गौशाला के माध्यम से हो रहा है, आज करीब 125 गोवंश इस गौशाला में हैं। क्षेत्र पर आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज की 50वें संयम स्वर्ण महोत्सव के उपलक्ष्य में कीर्ति स्तंभ का निर्माण कराया गया है।

आवागमन व्यवस्था

जिंतूर शहर औरंगाबाद, हैदराबाद महामार्ग पर स्थित होने से सभी बड़े शहरों से सड़क मार्ग द्वारा जुड़ा है। निकटतम शहर और रेलवे स्टेशन परभणि 42 किलोमीटर दूरी पर है आसेगाव, औढ़ा, नागनाथ, शिरपुर, नवागढ़ और शेरठशहापुर समीपवर्ती तीर्थ क्षेत्र हैं।

धरोहरस्वरूप प्राप्त हुए इन तीर्थों का संरक्षण एवं संवर्द्धन करना हमारा कर्तव्य है अतः प्रत्येक श्रद्धालु को आत्मीयता के साथ इन तीर्थों के संरक्षण के लिए आगे आना चाहिए।

“एक प्राचीन जिनालय का जीर्णोद्धार

सौ नवीन मंदिरों के निर्माण के बराबर है.”



समाचार

दिग्म्बर जैन मंदिर सीहोर में लाकर साफ सफाई की गई। प्रतिमा ९वीं शताब्दी की प्रतीत होती हैं। प्रतिमा पद्मासन होकर पाँच फन युक्त व यक्ष यक्षिणी सहित है।

प्रतिमा प्राप्त होने से जैन समाज में उत्साह व्याप्त हो गया है। आसपास के समाजजन दर्शन के लिए आ रहे हैं। समाज ने कहा कि यदि चौधरी घाट पर खुदाई कराई जाए तो और प्रतिमाएं प्राप्त हो सकती हैं।

सीहोर भोपाल इंदौर मार्ग पर स्थित है। श्री राजेन्द्र जैन महावीर ने कहा कि जिस तरह प्रतिमा दिखाई दे रही हैं वैसी प्रतिमा नेमावर के सिद्धोदय तीर्थ व पुष्पगिरी तीर्थ सोनकच्छ में भी स्थापित है, दोनों तीर्थों पर विराजमान प्रतिमाएं भी खुदाई में ही मिली थी, यह इलाका जैन धर्म का प्राचीन केंद्र रहा है, पुरातत्व की दृष्टि से उक्त स्थानों की खुदाई करने पर जैन प्रतिमाएं प्राप्त हो सकती हैं।





માનવીય સંવેદનાઓં કો સંક્રમિત હોને સે બચાએં

ડૉ. સુનીલ જૈન સંચય, લલિતપુર

હમ સભી અવગત હું, ઇન દિનોં કોવિડ કે સંકટ કે દૌર સે પૂર્ણ વિશ્વ ગુજર રહા હૈ। ભારત પર કોરોના કા કહર વજ્રપાત કી તરહ બરસા હૈ। કોરોના સે યે જો મૌતોં હો રહીં હું, વે મહજ એક આંકડા નહીં બલ્લિક કિસી કી પૂરી દુનિયા હૈ। એસે સમય મેં આદમી કે સાથ રિશ્ટોં કી ભી મૌત હો રહી હૈ। સંક્રમિત હોને હી અપને ભી પરાએ હો જાતે હું। રિશ્ટોં કી પરિભાષાએં હી બદલ ગયી હું। જીવન કે માયને બદલ ગએ હું। મૌત માત્ર અંકગણિત રહ ગયી પ્રતીત હો રહી હૈ।

કોરોના કી ઇસ લહર મેં ઇંસાનિયત કરાહ રહી હૈ, માનવીય સંવેદનાએં ઘાયલ અવસ્થા મેં હું। નૈસર્જિક સંબંધ ભી અબ કૃત્રિમ સે નજર આ રહે હું। લગતા હૈ જૈસે કોરોના સંક્રમણ કી ઇસ દસરી લહર મેં સામાજિક કે સાથ-સાથ માનવીય સંબંધ ભી સંક્રમિત હોને લગે હું।

સચ યા હૈ કી સમૂચી વૈશ્વિક ધરતી કો અપના કુટુંબ માનને વાલે દેશ મેં એક વાયરસ કા સંક્રમણ સમૂચે પરિવાર પર ભારી પડ રહા હૈ। હમારે પરિવાર કી સંયુક્તતા કો યા મહામારી ઇન્ટની તેજી સે અકેલા કર દેગી ઇસ તથ્ય કો લેકર સમાજ- મનોવિજ્ઞાની તક અચંભિત હું।

લગતા હૈ કોરોના કે બાદ દુનિયા ઔર ભયાવહ હોયું। એક આત્મીય કે જાને કે આસું સુખેતે નહીં કી દસરી ખબર આ જાતી હૈ। તસ્વીર ભયાવહ હૈ અભી એકમાત્ર લક્ષ્ય સંકટ કે દૌર સે ગુજર રહે અપને ભાઇયોંને આસું પોછેને કા હૈ। દર્દ ક્યા હોન્ના હૈ, જિનકે ઘર સે ઘર કા મુખ્યા અસમય ચલા ગયા, જિન્હોને અપનોને કો ખોયા હૈ ઉનસે બેઠત કૌન બતા સકતા હૈ। પરિવાર પર આએ અકસ્માત અપાર સંકટ કી ઘડી મેં સંકટ સે ઉબરને કે લિએ ઊંહેં તત્કાલ મદદ કી જરૂરત હૈ।

વાયરસ અદૃશ્ય હૈ, પર ઈશ્વર ભી તો અદૃશ્ય હૈ, ભરોસા રખિએ : પડોસી નાતે, રિસ્ટેદાર, મિત્ર યહાં તક કિ સગે સંબંધી તક ઇસ ત્રાસદી કે બીચ કિનારા કરતે દિખાઈ દે રહે હું, ક્યોંકિ હર કિસી કો સંક્રમિત હોને કા ભય હૈ। વાયરસ અદૃશ્ય હૈ, અવશ્ય ડરિએ, પર ઈશ્વર ભી તો અદૃશ્ય હૈ, ભરોસા રખિએ। ડર સે બડા કોઈ વાયરસ નહીં હૈ ઔર હિમ્પત સે બડી કોઈ વૈક્સિન નહીં હૈ। હમ ઇસ ભય ભે માહૌલ મેં અપને સહજ જીવન કે સભી મૂલ્ય યથા મિત્રતા, સમાજિક સંબંધ, કામ, સ્નેહ, ધાર્મિક ઔર રાજનીતિક લગાવ સબ ભૂલને સે લગે હું। ભય કે અતિ વિસ્તાર કો રોકને કે લિએ જરૂરી હૈ કી હમ અપને ભીતર કી સંવેદના કો જીવિત રહ્યેં. યહી સંવેદના હમારે ભય કો હમારા હી દુશ્મન હોને સે રોક પાણા। ઇસ ભય મેં હમ સભી કો કોરોના ફેલાને વાલા 'સંભાવિત દેહ' કે રૂપ મેં દેખને લગે હું, હમારી બસ એક હી ચિંતા રહ ગઈ હૈ શાયદ - કિ કહોં હમ બીમાર ન હો જાએં।

સંવેદનાઓં કો જિંદા રહ્યેં : યહ વક્ત આપસી તનાવ કા નહીં હૈ, ન હી ઘબરાને કા બલ્લિક એકજુટ હોકર લડને કા હૈ। હમ સભી ઇસ વિપત્તિ સે ભી નિકલેંગો। મનુષ્ય કી જિજીવિષા કા કોઈ તોડન નહીં હૈ, હમ ફિર ખઢે હોંગો। હમ યા હલડાઈ ભી જીતેંગો મગર સંવેદનાઓં કો જિંદા રહ્યેને કી જિમ્મેદારી ભી હમારી હી હૈ। યે વક્ત હૈ 'પરસ્પરોપગ્રહો જીવાનામ्', વસુધૈવ કુટુમ્બકમ, જૈસે સૂત્રોં કો ધરાતલ પર ઉતારને કા। 'પરહિત સરિસ ધર્મ નહિં ભાઈ' કા અર્થ હૈ કી દૂસરોં કો ભલાઈ કે સમાન દૂસરા કોઈ ધર્મ નહીં હૈ। જો વ્યક્તિ દૂસરોં કો સુખ પહુંચાતા હૈ, દૂસરોં કી

ભલાઈ કર કે પ્રસન્ન હોતા હૈ, ઉસકે સમાન સંસાર મેં કોઈ ભી વ્યક્તિ સુખી નહીં હૈ।

માનવીય સંવેદનાઓં સે યુક્ત સમાજ હી કિસી આપદા કાલ કા ડટકર મુકાબલા કર સકતા હૈ। વિપદા કે ઇસ કાલ મેં યદિ સમાજ કા દાયિત્વ બોધ મુખર દિખાઈ દે રહા હૈ તો ઇસકે પીछે નિશ્ચિત તૌર પર હમારી સંસ્કૃતિ કી મજબૂત જડે હું। કોરોના કે સંક્રમણ કાલ ને હમેં અપને વ્યવહાર કા વિશ્લેષણ કરને કા મૌકા ભી દિયા હૈ।

કોરોના સંક્રમણ કા દૌર વિકાસવાદી માનવ કો સીમા, સંયમ મેં રહેને કે લિએ સૃષ્ટિ કા બહુત બડા સબક હૈ।

હમારી અગ્નિ-પરીક્ષા કા કાલ : કોરોના મહામારી હમારી અગ્નિ-પરીક્ષા કા કાલ હૈ જિસને ન કેવળ હમારી પારંપરિક સાંસ્કૃતિક, ધાર્મિક ઉત્સવોં-પર્વો મેં વ્યવધાન ઉત્પન્ન કિયા હૈ। બલ્લિક હમારી શૈક્ષણિક ઔર આર્થિક ગતિવિધિઓં કો ભી બાધિત કિયા હૈ। ઇસને હમારે દેશ કી જનસંખ્યા કે એક બડે વર્ગ કો ભૂખ એવાં અભાવોં કી પ્રતાડના એવાં પીડા દી હૈ, અપનોને દરૂ કિયા હૈ। રોજગાર છીન લિયે હું, વ્યાપાર ઠપ્પ કર દિયે હું, સંકટ તો ચારોં ઓર બિખેરે હું, લેકિન તમામ વિપરીત સ્થિતિઓં કે બાવજૂદ હમને અપના સંયમ, ધૈર્ય, મનોબલ એવાં વિશ્વાસ નહીં ખોયા હૈ। હમ સબ એક સાથ મિલકર ઇન બઢતી હું ચુનાતીપૂર્ણ સમય હૈ। લેકિન મુઝે વિશ્વાસ હૈ કી યદિ હમ સબ મિલ કર સામના કરે તો ઇસ મહામારી કે કારણ ઇસ આપદા સે ઉબર સકતે હું। મનુષ્ય કી જિજીવિષા કે સામને કોઈ ભી મહામારી ટિક નહીં સકતી। ઇસલિએ હી તો માનવ તમામ અવરોધોં કે બાવજૂદ આગે બઢતા રહા હૈ। અબ કોરોના કા ભી અન્ત હોયા, હમ યા જંગ ભી જીતેંગો। દુનિયા ફિર સે પહલે કી તરહ અપની ગતિ સે ચલેગી પર યા તભી સંભવ હૈ જબ સભી પાત્ર લોગ કોરોના સે બચને કે લિએ ટીકા લગવા લોં।

ખેં આશાવાદિતા : આજ જબ ચારોં ઓર કોરોના મહામારી કે ચલતે નિરાશા દિખાઈ દે રહી હૈ તો એસે મેં જીવન કે લિએ રામવાણ ઔષધિ સિદ્ધ હો સકતી હૈ આશાવાદિતા। નિરાશા માનવ મન કો નકારાત્મકતા કી ખ્રી મેં ઝોંક દેને કે લિએ વિવશ કર રહી હૈ તો એસે મેં આશાવાદિતા જીવન મેં નેઈ ઊર્જા, સ્પર્ધા ઔર નેઈ આશા કી કિરણ બન શક્તિ કા સંચાર કરતે હુએ નએ જીવન કા સંચાર કર સકતી હૈ।

સકારાત્મકતા હમેં ચુનાતીઓં સે લડને કી રાહ દિખાતી હૈ :

પરિસ્થિતિયાં કૈસી ભી હોં, યા હમારે ચિત્ત પર આશ્રિત હૈ કી હમ જીવન મેં નકારાત્મક સોચ કે ખર-પત્રવાર બોયેં યા સકારાત્મક સોચ કે ઊંચે ફલોંને સે લડને વાલે વૃક્ષ લગાએં। પહલે કા ઉત્પ્રેરણ કુંઠા, વैમનસ્ય, હોડ, ભય ઔર દુર્ભાવના જૈસે નિગેટિવ માનસ મેં હોતા હૈ, તો દૂસરે કા ઉદાર, પ્રસન્ન, સ્વસ્થ, આત્મવિશ્વાસ સે ભરે સકારાત્મક મન મેં મૃત્યુ તો એક દિન સબકો આની હૈ ફિર ભય કેસા।

વૈજ્ઞાનિક પરીક્ષણોં સે યા સિદ્ધ હો ચુકા હૈ કી સકારાત્મક સોચ હમારે ભીતર સુખ, સુરક્ષા ઔર આનંદ કે ભાવ જાગૃત કરને વાલે જૈવિક રસાયન ઉત્પન્ન





કરતા હૈ, સાથ હી શરીર કી સુરક્ષા પ્રણાલી મેં ચાર ચાંડ લગાકર હમેં અનેક પ્રકાર કી રૂણતાઓં સે મુક્ત રહને મેં સહાયક સાબિત હોતા હૈ। યહી સકારાત્મકતા હમેં જીવન કી કઠિન સે કઠિન સ્થિતિઓં મેં હિમ્મત રહને ઔર તમામ ચુનૌતિઓં પર વિજયી હોને કી તાકત દેતી હૈ। કોરોના બચાવ કે નિયમો કો જીવન અનુશાસન કા ભાગ બનાના હોગા। ઇનકા સ્વતઃ સ્કૂર્ટ અનુપાલન દૂસરોને કે લિએ પ્રેરક ભી બનેગા।

મન:સ્થિતિ કો સંતુલિત રખિએ : પરિસ્થિતિયાં તો અનુકૂલ પ્રતિકૂલ હોતી થી હોતી હૈનું ઔર હોતી રહેંગી। યે તો હમારી પ્રતિક્રિયા હૈ જો મહત્વપૂર્ણ હૈ કિ હમ કિસી ઘટના કો કિસ રૂપ મેં લેતે હોયાં। પરિસ્થિતિ કુછ ભી હો મન:સ્થિતિ કો સંતુલિત રખિએ યહ ભાવ સભી મેં ઉભરના ચાહિએ કિ હમ ઇસ મુશ્કિલ મહામારી સે લડેંગે ઔર જીતેંગે ભી। યહી ભાવ હમેં સંકટ સે ઉભરને કી તાકત દેગા। માનવીય સંવેદનાઓં કો કોરોના સંક્રમણ સે બચાએં, સમાજ મેં સૌહાર્દ ઔર સહિષ્ણુતા બનાએ રહ્યોં।

મહામારી ને વૈસે ભી જીવનશૈલી કો કાફી કુછ બદલ દિયા હૈ, લેકિન યહ બદલાવ ભય આધારિત હૈ। હમ સબકો સ્વયં જરૂરી બદલાવ કરને ચાહિએ। સાથ હી હર કિસી કો અપને શરીર કી પ્રતિરોધક ક્ષમતા બઢાને કે પ્રયાસ કરને હોયાં। સૌભાગ્ય સે ભારત મેં ખાના પકાને કી પારંપરિક શૈલી મેં સદિયોં સે હલ્દી, દાલચીની, કાલી મિર્ચ, અદરક, લૌંગ જૈસે મસાલોને કા પ્રયોગ હોતા રહા હૈ

જિનકે ઔષધીય ગુણ સર્વ વિદિત હૈ। ઇસ સમય લોગોં કો અપને સ્વાસ્થ્ય કે લિએ યોગ કા અભ્યાસ કરતે રહના ચાહિએ।

કરેં મન કો મજબૂત : હમેં સમ્ઝલાને કી જરૂરત હૈ, એક દસરે કા સાથ દેને કી જરૂરત હૈ। યદિ મન મજબૂત હોગા તો હમ ઇસ મહામારી કો હરાને મેં કામયાબ હોયાં। ઇસકે લિએ હમેં મન કો મજબૂત બનાના હોગા, ઘબરાને સે સમસ્યા કા હલ નહીં નિકલાને વાલા। મન કો અચ્છા રખિએ પરિણામ સાર્થક હોયાં। તન કી બીમારી કો મન પર હોંબી હોને સે બચાએં। યહ જંગ બહુત હદ તક મન કો મજબૂતી પ્રદાન કર સકારાત્મક સોચ કે સાથ જીતને મેં કામયાબ હો સકતે હૈનું।

આધ્યાત્મિક દૃષ્ટિ જાગૃત કરો : અપને ભીતર આધ્યાત્મિક દૃષ્ટિ જાગૃત કરો। આધ્યાત્મિકતા કા સંબન્ધ મનુષ્ય કે આંતરિક જીવન સે હૈ ઔર ઇસકી શુસ્થાત હોતી હૈ-- ઉસકી અંતર્યાત્રા સે। વે સભી ગતિવિધિયાં, જો મનુષ્ય કો પરિષ્કૃત, નિર્મિલ બનાતી હૈનું, આનન્દ સે ભરપૂર કરતી હૈનું, પૂર્ણતા કા એહસાસ દેતી હૈનું, વે સબ આધ્યાત્મમ કે અન્દર આતી હૈનું। જો વ્યક્તિ આધ્યાત્મિક ડાગ પર આગે બઢતે હોયાં, તનમે અદમ્ય સાહસ, સશક્ત મન, સ્વસ્થ શરીર વ સંતુલિત ભાવનાઓં કા હોના જરૂરી હૈ। માનવ કી અગણિત સમસ્યાઓં કો હલ કરને ઔર સફળ જીવન જીને કે લિએ અધ્યાત્મ સે બઢકર કોઈ ઉપાય નહીં હૈ।

કિસી કા હાથ છુના નહીં પરા
કિસી કા સાથ છોડના નહીં॥



સમાચાર

ધૂલિયા મેં મિલા પ્રાચીન નંદીશ્વર જિન પ્રતિમા ફલક



મહારાષ્ટ્ર કે ધૂલિયા જિલે કે દાડિચા મેં એક કિસાન કો ખેત મેં બાવન જિન મૂર્તિફલક પ્રાપ્ત હુએ હૈ જો જૈન પુરાતત્વ વ મૂર્તિકલા કી દૃષ્ટિ સે બહુત મહત્વપૂર્ણ હૈ। શ્રી દર્શન જૈન વ પં. ધરેણન્દ્રકુમાર બેલાગાંવ ને સૂચના દી કિ મહારાષ્ટ્ર કે ધૂલિયા જિલા સે નંદુબાર કી ઓર લગભગ 4 કિ.મી. પર 'રામી' કે ખેત મેં કામ કરતે હુએ કિસાન કો 11 ઇંચ કા ધાતુ કા જૈન-પ્રતિમા-ફલક પ્રાપ્ત હુએ હૈ। ઇસમે ચારોં ઓર 13-13,

52 જિન પ્રતિમાએં બની હુએ હૈનું। જૈન ગ્રન્થોને કે અનુસાર યાં નંદીશ્વર દ્વીપ કે બાવન ચૈત્યાલય કે સ્વરૂપ કા સંક્ષિપ્ત ઔર લઘુ સ્વરૂપ હૈ। તીન ખણ્ડ વાલે ચતુર્મુખી પ્રતિમાંકન મેં પ્રથમ બીચ મેં ચારોં ઓર પદ્માસન મેં એક બઢી પ્રતિમા ઔર ઉસકે દોનોં તરફ દો-દો (ચાર) ઇસ તરફ પન્દ્રહ પ્રતિમાએં હોયાં। દ્વિતીય ખણ્ડ મેં એક એક દિશા મેં પાંચ-પાંચ કુલ બીસ પ્રતિમાએં ઔર ઉપરિમ ખણ્ડ મેં પ્રત્યેક દિશા મેં



તીન-તીન કુલ બાર પ્રતિમાએં હોયાં। ઇસ તરફ તીનોં ખણ્ડોની ચારોં તરફ કી કુલ બાવન જિન પ્રતિમાએં હોયાં। સભી પદ્માસન હોયાં। ચારોં ઓર કી મુખ્ય પ્રતિમાઓને કે નીચે પુરા લિપિ મેં એક-એક પંક્તિ કા લેખ હૈ, જો બહુત મહત્વપૂર્ણ હૈ। ઇસ લેખ કે પઠન સે પ્રતિમા કી પ્રાચીનતા આદિ કી વસ્તુ સ્થિતિ જ્ઞાત હો જાયેગી।

જૈનાગમ કે અનુસાર આઠમા દ્વીપ નંદીશ્વર દ્વીપ હૈ। જહાં અકૃત્રિમ જિન ચૈત્યાલય હોયાં। યહાં 4 અંજનગિર, 16 દધિમુખ ઔર 32 રતિકર યે 52 જિનમંદિર હોયાં। પ્રત્યેક જિનમંદિર મેં પદ્માસન જિન પ્રતિમાયેં વિરાજમાન હોયાં। ઇન મંદિરોની વિવિધ પ્રકાર સે વરણ હોયાં। ચારોં પ્રકાર- જ્યોતિષી, વાનવ્યાંતર, ભવનવાસી ઔર કલ્પવાસી દેવ યાં પૂજા કરતે હોયાં। જૈન સમાજ મેં અષાદ્હિકા અર્થાત્ કાર્તિક, ફાલ્ગુન ઔર આષાઢ માહ કે અન્ત કે આઠ દિન યાં કી પૂજા કરને કા વિશેષ મહત્વ હૈ। સોનગીર (ધુલે) જૈન સમાજ ને સ્થાનીય પુલિસ દ્વારા પ્રતિમાજી કો સૌંપને કી માંગ કી થી જિસકો સ્વીકારતે હુએ સોનગીર (ધુલે) જૈન સમાજ કો યાં પ્રતિમા સૌંપ દી ગયી હૈ।





लोटीवाडा में खुदाई के दौरान मिली 722 साल प्राचीन भगवान महावीर की प्रतिमा

चांदना मार्ग स्थित जालोर- सिरोहो सीमा पर सटे लोटीवाडा गांव में २४ तीर्थकर युक्त भगवान महावीर स्वामी की प्राचीन प्रतिमा प्राप्त हुई है।

ग्रामीण छैलसिंह ने बताया कि गांव के मुख्य चौहटे के पास करीब एक माह पूर्व ग्राम पंचायत द्वारा पाइप लाइन खुदाई का कार्य चल रहा था। जेसीबी द्वारा खोदी जा रही खाई से अचानक सफेद शिला निकली। मिट्टी से सनी होने से उस समय किसी का ध्यान नहीं गया। लेकिन रविवार को तेज वारिश के दौरान मिट्टी धुलने के साथ मूर्ति का आकार नजर आने लगा। सूचना पर गांव के लोग भी मौके पर पहुंचे और सभी ने जयकारे लगाए।

ग्रामीणों ने बताया कि जेसीबी द्वारा करीब एक माह पूर्व पाइप बिछाने के कार्य के लिए खुदाई के दौरान यह पत्थरनुमा आकृति मिली थी,



लेकिन उस समय इसे पास ही रख दिया था। लेकिन २ दिन पहले हुई बारिश से धुलाई के बाद मूर्ति होने की जानकारी मिली। लोगों ने इसे चमत्कार माना।

लोटीवाडा गांव में प्राचीन मूर्ति की प्राप्त होने के समाचार मिलने पर सियाणा जैन पेढ़ी से दिनेश जैन, मुकेश जैन व जयंतीलाल जैन गांव पहुंचे और मूर्ति को सियाणा ले जाने की बात कही, लेकिन स्थानीय ग्रामीणों ने इसी गांव में मूर्ति प्रतिष्ठित करने की बात कही।

मूर्ति पर अद्भुत नक्काशी— मूर्ति पर अंकित शिलालेख प्राचीन शैली में है, लेकिन संवत 1355 अंकित नजर आ रहा है। जानकारों के अनुसार यह मूर्ति ७२२ वर्ष प्राचीन है। मूर्ति पर नक्काशी भी अद्भुत है।



तीर्थक्षेत्र कमेटी के पदाधिकारी पहुँचे नेमावर आचार्य श्री से की तत्व चर्चा



कोरोनो महामारी के लम्बे अंतराल बाद दिनांक ८ जून २०२१ को नेमावर आचार्यश्री के दर्शनार्थ हेतु भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के उपाध्यक्ष आगरा के यशश्वी चेयरमैन श्री प्रदीप जैन, (पीएनसी) महापौर



आगरा आदरणीय श्री नवीन जैन, श्री विनोद बड़जात्या रायपुर, मंत्री श्री खुशाल जैन (सीए) मुर्म्बी और श्री रविन्द्र जैन पत्रकार भोपाल पधारे जहाँ पर उन्होंने आचार्य श्री से तत्व चर्चा की।



कर्नाटक राज्य के अल्पसंख्यक विभाग के मंत्रीजी के साथ श्रवणबेलगोला प्रोजेक्ट

इम्प्लीमेन्टेशन कमेटी की मीटिंग



परम पूज्य भद्राक चारुकीर्ति स्वामी जी के अनुसार कर्नाटक राज्य के अल्पसंख्यक विभाग के मंत्री श्रीमंत पाटिल जी के साथ श्रवणबेलगोला प्रोजेक्ट इम्प्लीमेन्टेशन कमेटी की मीटिंग कर्नाटक विधानसभा में अल्पसंख्यक मंत्री के कार्यालय सभा भवन में आयोजित हुई। कर्नाटक के अल्पसंख्यात सचिव श्री मनिवनन, डायरेक्टर श्री सुरेश व सभी अधिकारी उपस्थित थे। श्रवणबेलगोला के उपरोक्त प्रोजेक्ट के लिए बहुत ही सोहार्द धूर्ण वातावरण में सार्थक मीटिंग हुयी व बीस करोड़ रुपए की राशि कर्नाटक राज्य सरकार ने देने का आदेश पारित किया। राज्य की सभी पत्रिका व अखबार में समाचार भी प्रकाशित हुये हैं।

- विनोद बाकलीवाल, मैसूर



परिषद भवन-विद्यानंद निलय का लोकार्पण एवं गुरुदेव प.पू. श्वेतपिच्छाचार्य श्री विद्यानंद जी मुनिराज की चरण छतरी प्रतिष्ठा समारोह हर्षोल्लास के साथ संपन्न



नई दिल्ली। परम पूज्य सिद्धांतचक्रवर्ती श्वेतपिच्छाचार्य श्री विद्यानंद जी मुनिराज की स्मृति में परिषद द्वारा निर्मित "आचार्य विद्यानंद निलय-परिषद भवन" का लोकार्पण व गुरुदेव चरण छतरी प्रतिष्ठापन समारोह प.पूज्य निर्यापक पट्टाचार्य आचार्य श्री श्रुतसागर जी मुनिराज व मुनिश्री अनुमान सागर जी महाराज सांसंघ के पावन सानिध्य में रविवार 27 जून 2021 को परिषद भवन दिग्म्बर जैन मंदिर, कालकाजी एक्स. नई दिल्ली में बहुत ही महती धर्मप्रभावना के साथ हर्षोल्लास वातावरण में संपन्न हुआ। कोरोना को देखते हुए सरकारी नियमों का पालन किया गया।

इस पावन अवसर पर आचार्यश्री श्रुतसागर जी महाराज ने अपने मंगल आशीर्वाद में कहा कि हमें संगठित रहना है, मतभेद हो सकते हैं, मनभेद नहीं होना चाहिए, भेदभाव नहीं करना, अध्यात्म एवं धर्मध्यान से जुड़े रहें। मुनि अनुमानसागर जी महाराज ने कहा कि आचार्यश्री की चरण छतरी, दिल्ली के प्रत्येक मंदिरों में प्रतिष्ठापित होना चाहिए। आचार्यश्री के जहां भी चरण पड़ते रहे, वह स्थान तीर्थ हो जाता रहा।



परिषद के रा. अध्यक्ष डॉ. जीवनलाल जैन, सागर (म.प्र.) ने अपने उद्घोषण में आचार्यश्री विद्यानंद जी मुनिराज के संबन्ध में बताया कि आचार्यश्री को जैनर्दणों का ही नहीं अपितु समस्त दर्शनों का विस्तार से ज्ञान था, हृदय से करुणा का स्रोत बहता था, जैनर्धम संस्कृति के इनसाइकिलोपीडिया थे। उनका आशीर्वाद परिषद को सदैव मिलता रहा है। कार्याध्यक्ष श्री चक्रेश जैन ने कहा कि आज पूज्य आचार्यश्री की छाया दिख रही है। राष्ट्रीय महामंत्री श्री अनिल पारसदास जैन (नेपाल) ने बताया कि यह सुखद संयोग है वर्ष 2022 में पूज्य गुरुदेव की जन्मजयंती एवं परिषद की स्थापना का "शताब्दी वर्ष" पूर्ण हो रहा है। परिषद इस महोत्सव को शताब्दी वर्ष के रूप में भव्यरूप से आयोजित करेगा।

परिषद भवन-दिग्म्बर जैन मंदिर, आवागमन हेतु प्रसिद्ध व्यावसायिक केन्द्र नेहरूप्लेस के निकट व गोविंदपुरी मैट्रो स्टेशन के पास स्थित है। इस निलय की सभी मंजिलें वातानुकूलित व सर्वसुविधायुक्त हैं। भूतल पर सभागार, रसोईघर, स्टोर, प्रथम तल पर संत निवास (तीन कमरे) एवं ऊपर के दो तलों पर अतिथि निवास हेतु 7 कमरों की व्यवस्था की गई है। जिसमें दिल्ली जैसे महानगर में दूरदराज से आए हुए प्रतिनिधियों तथा उच्च परीक्षाओं के लिए आगंतुक जैन छात्रों को उचित सहयोग पर उपलब्ध है, विशेषकर निर्धन छात्रों को 2-3 दिन के लिए ठहरने हेतु निःशुल्क व्यवस्था की गई है।

प्रातःकालीन ध्वजारोहण श्री नीरज जैन कालकाजी, मंगलाचरण प्रसिद्ध विद्वान डॉ. वीरसागर जैन के पश्चात भगवान महावीर एवं आचार्य विद्यानंद जी मुनिराज का चित्र अनावरण दिल्ली प्रदेश के कोषाध्यक्ष श्री जिनेन्द्र जैन दरीबाकंला एवं श्री एम. एल. जैन अलकनंदा, दीप प्रज्जवलन गा. अध्यक्ष डॉ. जीवनलाल जैन, कार्याध्यक्ष श्री चक्रेश जैन, इंजि. सुशील जैन, आर्किटेक्ट मनोज जैन एवं श्री सुभाष बडजात्या के द्वारा किया गया।





गुरुपूर्णिमा

ब्र. डॉ. सविता जैन, रत्लाम

दिगम्बर जैन आम्नाय के परिप्रेक्ष्य में भारतीय संस्कृति क्रषियों मुनियों की संस्कृति हैं। भारतीय सभ्यता को सन्तो ने (गुरुने) अपने जान, चारित्र व तपोबल से समृद्ध बनाया है। विश्व की प्रत्येक संस्कृति, धर्म ने गुरु को सर्वोपरि स्थान दिया है।

दिगम्बर जैन आम्नाय में वर्तमान हुण्डावसर्पिणी काल की चौबीसी के प्रथम तीर्थकर आदि ब्रह्मा भगवान आदिनाथ ही प्रथम गुरु माने जाते हैं। भगवान क्रष्णभद्र (आदिनाथ) ने गृहस्थ अवस्था में असि, मसि, कृषि, शिल्प, शास्त्र आदि 72 कलाएँ मानव समाज को सिखाई। अंक व शब्द ज्ञान के भी आप प्रणेता रहे हैं। चूंकि वर्तमान में अंतिम तीर्थकर भगवान वर्धमान (महावीर) का शासन काल चल रहा है अतएव भगवान महावीर के समय से गुरु पूर्णिमा को उल्लेखित करते हैं। वैशाख कृष्ण दशमी को भगवान -महावीर को केवलज्ञान हो गया किन्तु केवलज्ञान के पश्चात् 66 दिन तक भगवान की दिव्यध्वनि नहींखिरी। समस्त श्रोता चिन्तित हो गये वे सब प्रतीक्षारत थे कि भगवान के मुखारविंद से कब धर्मोपदेशसुने? सौर्धम इन्द्र ने भवितव्यता को जानकर विद्याविशारद इन्द्रभूति, वायुभूति एवं अग्निभूती गौतमगौत्री नामक ब्राह्मणों के आश्रम में बटुक का वेश धारणकर पहुँचता है। वे तीनों ब्राह्मण विद्वानथे, ज्ञानी थे किन्तु सम्यकज्ञान नहीं था मिथ्याभिमानी थे। वहां पहुँच कर बटुक वेशी इन्द्र ने उनसेकहा कि मेरी कुछ जिज्ञासा हैं। मेरे गुरु का मौन है कृपया आप मेरी जिज्ञासा का समाधान करो। बटुकवेशी इन्द्र ने पुछा-

त्रैकाल्यं द्रव्यचर्टकं नवपद सहितं जीव षटकाय लेश्याः।

पंचान्ये चास्तिकाया ब्रत समिति गति ज्ञान चारित्र भेदाः॥

इत्येतन्मोक्ष मूलं त्रिभुवन महितैः प्रोक्त महदभिरीशैः।

प्रत्येति श्रद्धाति स्पृशति च मतिमान यः सर्वै शुद्ध दृष्टिः॥

जैसे ही ये बात सुनी तीनों भाई हतप्रभ रह गए। सोचने लगे सब कुछ तो पढ़ा, किन्तु तीन काल छः द्रव्य आदि यह सब हमने नहीं पढ़ा है। तीनों भाई विद्वान थे तीनों के 500-500 शिष्य थे, किन्तु सम्यकदर्शन के अभाव में अहम् था। जब उन्हें कोई उत्तर नहीं सुझा तो 500-500 शिष्यों के समक्षलज्जित नहीं होना पड़े। इस हेतु उन्होंने बटुक वेश धारी इन्द्र से कहाँ कि हम इसका उत्तर तुम्हें नहींतुम्हारे गुरु के समक्ष ही देंगे और अभिमान वश कहाँ कि हमें अपने गुरु के पास ले चलो। वे तीनोंगौतम गात्री ब्राह्मण बटुक वेशधारी इन्द्र के साथ अपने-अपने 500-500 शिष्यों के साथ विपुलाचलपर्वत की ओर भगवान के समवशारण की ओर चल दिए। जैसे ही समवशारण में पहुँचे सर्वप्रथममानस्तम्भ का दर्शन करते ही उनका मान गलिलत हो गया। उसी समय वे भगवान के श्री चरणों में नमतमस्तक हो जाते हैं। और अनेक प्रकार पश्चाताप करते हैं कि हमने आज तक वास्तविक धर्म कोनहीं पहचाना इत्यादि हम आपसे ही विवाद करने आ गये हमें क्षमा करें प्रभु। इस तरह इन्द्रभूति गौतम - अपने भाईयों एवं सभी शिष्यों सहित तत्क्षण ही जैनेश्वरी दीक्षा ग्रहण कर लेते हैं। उसी समय उन्हेंन: पर्ययज्ञान प्राप्त हो जाता है। यह तिथि आषाढ़ शुक्ला पूर्णिमा थी। दीक्षा ग्रहण कर गौतम स्वामीभगवान महावीर के प्रमुख प्रथम गणधर बने थे। वे वास्तविक गुरु हैं। तब से लेकर आज तक इसतिथि को गुरु पूर्णिमा मनाई जाती है।

जैन तीर्थवंदना

गुरु पूर्णिमा एक ऐसा पर्व जिसमें अपने जीवन के मार्गदर्शक सभी निर्देशक को स्मरण किया जाता है। अर्थात् गुरु-गुरु शब्द का संधि विच्छेद किया जाए तो ग+उ+र+उ+गा का तात्पर्य गंभीर, 'उ' का तात्पर्य उदार, 'र' का तात्पर्य रहस्य, 'उ' का तात्पर्य उद्घाटन लिया जाए तो गुरु एक ऐसा व्यक्तित्व है जो गंभीर हो, उदार हो, रहस्य को उद्घाटन करने वाला हो, कहा गया है।

"गु" शब्द स्त्वन्ध कारस्य 'रु' शब्दस्य तन्निवर्तकः,

अंधकार विनाशित्वाद्, गुरु इत्याभिधीयते,

"गु" अर्थात् अंधकार रु अर्थात् निवारण करने वाले। जो अज्ञान रूपी अंधकार-निवास्त्रण करने-वाले हैं - --वही सच्चे गुरु है।

क्षत्रचूडामणि ग्रन्थ में आचार्य वादीमसिहं जी सूरी ने गुरु की परिभाषा दी है - "रत्नत्रय विशुद्धसन पार्श्व स्नेही परार्थकृता।

परिपालित धर्मोहि भवानोस्तारको गुरु"॥

अर्थात् - गुरु रत्नत्रय से विशुद्ध होते हुए भी भव्य जीवों पर स्नेह रखने वाले होते हैं, अहिंसा धर्म का पालन करने वाले गुरु ही भव सिन्धु में डूबते हुए भव्यजनों के तरण तारण हैं।

शास्त्र स्वाध्याय के प्रारम्भ में मंगलाचरण में भी कहा गया है-

अज्ञानतिमिरान्धानां ज्ञानाज्जनं शत्राकाया।

चक्षुस्त्रममीलितं येन तस्मै श्री गुरुवे नमः....

अर्थात् - अज्ञान रूपी तिमिर से जो अंधे हो गए हैं ऐसे चक्षुओं को ज्ञानांजन की शलाका से उन्मीलित(खोलने) कर देने वाले गुरु नमस्कार के योग्य हैं। जिस प्रकार कोई रोगी व्यक्ति अपनी चिकित्सा करवाने के लिए योग्य कुशल वैद्य अथवा चिकित्सक के पास जाता है और वह वैद्य अथवा चिकित्सक उसका परीक्षण कर औषधि के माध्यम से उसे रोगमुक्तकरता है उसी प्रकार गुरु हमारी आत्मा में जो विषय विकारों के रोग है उन्हें अपने ज्ञान तथा सद्गुरुपदेशरूपी औषधि के द्वारा नष्ट करते हैं। गुरु ही हमें समीचीन ज्ञान देकर हमें शिक्षित करे हमें सही अर्थोंमें जीना सिखाते हैं।

अंग्रेजी लेखक रूकिणी ने कहा है कि-

"the teacher is like the candle which lights others in consuming itself"

अर्थात् शिक्षक मोमबत्ती के समान है जो स्वयं जल कर दूसरों को प्रकाश देता है। बोलचाल की भाषा में कहाँ जाता है कि - "जिस के जीवन में गुरु नहीं उसका जीवन शुरू नहीं"। यह एकदम सटीक है क्योंकि गुरु ही मानव समाज के नैतिक, चारित्रिक व आध्यात्मिक उत्थान में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है।

दिगम्बर जैन समाज में देव शास्त्र गुरु को समान आदर दिया गया है। यदि हम शीघ्रता में हो तो पूजन में देव शास्त्र गुरु की सामुहिक पूजन कर संतोष प्राप्त करते हैं। अन्ततः भगवान महावीर की देशना के संवाहक गुरु गौतम गणधर को स्मरण करते हुए उनके अनंतउपकारों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए, वर्तमान में गुरु परम्परा का निर्वहन करने वाले सभीगुरुओं के चरणों में नमन करते हुए हमें गुरु पूर्णिमा के आध्यात्मिक महत्व को स्मरण करना चाहिए। पुनः आप सभी को गुरु पूर्णिमा की बहुत बधाई।



भगवान भरत ज्ञानस्थली दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र में पंचकल्याणक हर्षोल्लासपूर्वक सम्पन्न



चक्रवर्ती भगवान भरत ज्ञानस्थली दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र, बड़ी मूर्ति, कनॉट प्लेस में गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की पावन प्रेरणा से 31 फुट उत्तुंग भगवान भरत एवं हीं की 24 रत्न प्रतिमाओं की पंचकल्याणक प्रतिष्ठा ज्येष्ठ शुक्ला षष्ठी से दशमी (16 से 20 जून 2021) तक सरकार के नियमों के निर्देशानुसार सम्पन्न की गई। भगवान भरत स्वामी की 31 फुट उत्तुंग उंची अत्यन्त ही मनोहारी, अतिशयकारी प्रतिमा की स्थापना की गई, जिसमें चारित्रचक्रवर्ती आचार्यश्री शांतिसागर जी महाराज के अक्षुण्ण परम्परा के सप्तम पट्टाचार्य श्री अनेकांतसागर जी महाराज एवं भारतगौरव गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती



माताजी के पावन संसंघ सान्निध्य में पंचकल्याणक प्रतिष्ठा सम्पन्न की गई।

जिसका झण्डारोहण पूर्वक शुभारंभ श्री वीरचंद-उषारानी जैन, श्री अजय कुमार बड़जात्या, करोलबाग, दिल्ली के द्वारा हुआ, जिसमें माता-पिता बनने का सौभाग्य श्री अनिल कुमार-श्रीमती अनीता जैन, प्रीतविहार-दिल्ली, सौधर्म इन्द्र श्री अध्यात्म-अर्पिता जैन-लखनऊ, धनकुबेर श्री धीरेन्द्र-सुनंदा जैन, राजाबाजार, ईशान इन्द्र श्री राहुल-डॉ. मोनिका जैन, विकासपुरी सुपुत्र श्री मनोरमा-महेशचंद जैन, यज्ञनायक श्री मुकेश जैन ठेकेदार, बंगाली मार्केट, श्री विजय-रश्मि जैन, राजपुर रोड, श्री प्रदीप-हेमलता जैन, खारीबाबली, श्री जिनराज-मंजू जैन, सिविल लाइंस, श्री अरिहंत-आशिका जैन, बंगाली मार्केट, श्री विनोद-शकुन्तला जैन, उत्तमनगर, मुख्यरूप से सौभाग्य प्राप्त किया। सम्पूर्ण कार्यक्रम



प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी के मार्गदर्शन एवं पीठाधीश स्वस्तिश्री खीन्दकीर्ति स्वामीजी के निर्देशन एवं जैन सभा, नई दिल्ली के श्री अतुल जैन, श्री राजकुमार जैन, श्री विनोद जैन, श्री राकेश जैन, श्री सुनील जैन, श्री सुदर्शन जैन आदि का विशेष सहयोग से सम्पन्न हुआ। सम्पूर्ण कार्यक्रम प्रतिष्ठाचार्य विजय कुमार जैन, प्रतिष्ठाचार्य डॉ. जीवन प्रकाश जैन, दीपक जैन, सतेन्द्र जैन, वीरेन्द्र जैन-जन्मद्वादीप-हस्तिनापुर ने विधिविधानपूर्वक सम्पन्न कराया। मंच संचालन श्री बिजेन्द्र जैन-शाहदरा के द्वारा किया गया।





वीर शासन जयंती - क्यों और कैसे

- डॉ. सुशीला सालगिया, इन्दौर



ईसा पूर्व 557 वैशाख शुक्ल दशमी का दिन था। बिहार के जृम्मक गाँव की क्रजुकूला नदी किनारे शाल वृक्ष के नीचे एक अभूतपूर्व घटना हटी। दीक्षा के बाद साढ़े बारह वर्ष विहार करते हुए मौन तपस्या सतत चिन्तन और ध्यान के पश्चात् भगवान् महावीर को केवलज्ञान की प्राप्ति हुई। अब वे पूर्ण शुद्ध त्रिकाल ज्ञाता / सर्वज्ञ बन गये थे। सौधर्म इंद्र को यह ज्ञात होते ही अत्यधिक आनंद की अनुभूति हुई। भगवान की उस ज्ञान राशि को जन कल्याण हित सर्वग्राही बनाने के उद्देश्य से उसने कुबेर को आदेशित कर भव्य समवसरण की रचना करवाई किन्तु यहाँ प्रभु मौन ही रहे। प्रभु ने जहाँ भी विहार किया वहाँ समवसरण की रचना की गई, पर प्रभु मौन ही रहे।

चिन्तित होकर सौधर्म इंद्र ने अवधिज्ञान से जाना कि महान प्रतिभाशाली विद्वान के अभाव में भगवान की वाणी नहीं खिर रही है। आगे यह भी जाना कि इंद्रभूति ब्राह्मण ही ऐसा विद्वान है जो तीर्थकर की वाणी को सुनकर उसे सरल सामान्य भाषा में सर्व साधारण के लिए सुलभ बना सकता है। एक वृद्ध ब्राह्मण का रूप धारण कर इंद्र वेद वेदांग के ज्ञाता इंद्रभूति गौतम के पास पहुँचे और - "त्रैकाल्यं द्रव्य षट्कम" सूत्र का अर्थ पूछा और साथ में यह भी कहा कि आप सही अर्थ बता दोगे तो मैं आपका शिष्य बन जाऊँगा और यदि नहीं बता पाये तो आपको मेरे गुरु का शिष्यत्व स्वीकारना होगा। स्वयं को सर्वज्ञाता समझने वाले इंद्रभूति ने सोचा, इनके गुरु से ही मिलकर उन्हें अर्थ बताऊँगा यह अज्ञात एवं अद्भुत सूत्र है। यह सोच इंद्रभूति अपने दो विद्वान भ्राता वायुभूति तथा अग्निभूति तथा सभी अपने अपने पाँच सौ शिष्यों सहित वृद्ध ब्राह्मण के साथ उनके गुरु से भेंट करने चल दिये। इंद्र तो यही चाहता था। राजगृही के विपुलाचल पर एक योजन प्रमाण बने उस समवसरण की भव्यता षड्क्रतु का एक साथ दिखना पुष्प वृष्टि का होना विरोधी स्वभाव के जीवों का एक साथ बैठना यह सब देख कर इंद्रभूति सहित सभी विस्मित थे। मानस्तंभ को देखते ही इंद्रभूति का ज्ञानमद गलित हो गया। समवसरण के द्वारा में प्रवेश करते ही उन्होंने तीर्थकर महावीर का दर्शन किया और पास पहुँच कर उनका शिष्यत्व स्वीकार किया। महात्री दिग्म्बर मनि बनते ही वे सम्यकदृष्टि और मनःपर्यय ज्ञानी बन गये। ऐसा होते ही तुरंत मेघ गर्जना के सदृश्य तीर्थकर महावीर की वाणी खिरी अर्थात् उनका दिव्य उपदेश प्रारंभ हुआ।

पूरे 66 दिन मौन रहने के पश्चात् तीर्थकर महावीर की प्राणीमात्र के लिए हितकारी वाणी खिरी वह शुभ दिवस था श्रावण बढ़ी एकम (कृष्ण पक्ष प्रतिपदा)। यह दिन वीर शासन जयंती अथवा वीर शासन उदय दिवस के नाम से प्रसिद्ध हुआ। यह दिन धर्म तीर्थ नाम से भी जाना गया। भगवान महावीर

का धर्म शासन इस दिन से प्रारंभ हुआ और पंचम काल के अंतिम मुनि वीरांगज के समय तक चलेगा। लोग इसे शुभ दिवस मानकर कोई शुभ कार्य आरंभ करते थे तथा इस दिन को वर्ष का पहला दिन भी मानते हैं। वीर शासन दिवस के प्रारंभ का उल्लेख आगम ग्रंथों में मिलता है। यथा -

एथावसप्पिणी चउत्थ काइस्स चरिय आगम्मि ।

तैतीसवास अडमास पण्णरस दिवस सेसम्मि ॥ 68 ॥

वासस्स पढममासे सावण णामम्मि बहुल पडिवाए ।

अभिजीण खत्तम्मि य उप्पीत्ती धम्मतिथस्स ॥ 69 ॥

यहाँ अवसर्पिणी के चतुर्थ काल के अंतिम भाग में तैतीस वर्ष आठ माह और पन्द्रह दिन शेष रहने पर वर्ष के श्रावण नामक प्रथम महीने में कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा के दिन अभिजीत नक्षत्र के उदित रहने पर धर्म तीर्थ की उत्पत्ति हुई। 68 - 69 ॥

इस दिन भगवान महावीर की दिव्य ध्वनि खिरी वह अठारह महाभाषा और सात सौ लघु भाषा रूप सर्वग्राही थी। भगवान महावीर वाणी को श्रवण करके गौतम स्वामी ने द्वादशांग अर्थात् ग्यारह अंगों और चैदह पूर्वा की रचना कर दी। वही ज्ञान श्रुत परंपरा से आचार्यों को प्राप्त हुआ। किन्तु काल के प्रभाव से बहुत सा भाग विस्मृत होकर शेष अंश लिपिबद्ध हुआ जो वर्तमान में हमें उपलब्ध है।

गंधकुटी में अधर में विराजित प्रभु के दर्शन चारों दिशाओं के दर्शक कर सकते थे। यही कारण है कि आज जहाँ भी मंदिरों में समवसरण बने हैं उनमें चार मूर्तियाँ स्थापित की हुई होती हैं वे उसी का प्रतीक है। भगवान महावीर की वाणी का जन जीवन पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ा। उनके उपदेश जन प्रचलित प्राकृत भाषा में होते थे, जो सर्वग्राही थे। अहिंसामयी उपदेश सुनकर लोगों को पश्च हिंसा जैसे कृत्य से घृणा होने लगी। समाज में फैली विकृतियों में सुधार होने लगा। कई राजा महाराजा और उनकी प्रजा ने जैन धर्म स्वीकार कर लिया। राजगृही (मगधदेश) के नेश श्रेणिक तो उनके उपदेश सुनकर उनके परम भक्त बन गये। उन्होंने भगवान महावीर से साठ हजार प्रश्न पूछे थे। उन्हीं के उत्तर स्वरूप कई ग्रंथों की रचना भी हुई।

वीर शासन जयंती एक बड़ी धार्मिक पर्व है इसे बड़ी श्रद्धा और उत्साह से मनाया जाता है। सर्वप्रथम मंदिर में भगवान महावीरस्वामी और यदि श्रुत देवी जिसके मस्तक पर भगवान विराजमान हैं ऐसी मूर्ति हो उसका भी अभिषेक करें। भगवान महावीर और जिनवाणी की पूजा करें फिर इस मंत्र का जाप करें। ओम् हीं सर्व भाषामय दिव्य ध्वनि स्वामिने श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः ॥

इस दिन विशेष रूप से महावीर की देशना अर्थात् उपदेश संबंधी ग्रंथों का स्वाध्याय करें और उनका मनन चिन्तन कर यथासंभव महावीर वाणी को आत्मसात करें उनके बताये मार्ग का अनुसरण करें। इस दिन ब्रत करने की भी परंपरा रही है। इस वर्ष 24 जुलाई को यह पर्व आ रहा है। वैसे पर्व मनाने का उद्देश्य तो यही होना चाहिए कि हम इस दिन के महत्व को समझें और भगवान महावीर के अनुशासन का पालन करें।





आचार्य श्री विद्यासागर जी वेबिनार सम्पन्न

आचार्यश्री की प्रेरणा से जेलों में संचालित हथकरघा से बदल रहा है कैदियों का जीवन
नई शिक्षा नीति को आचार्यश्री ने दी है नई दिशा, वर्चुअल समर्पित की गई विनयांजलि

ललितपुरा आचार्य श्री विद्यासागर युवा मंच बुंदेलखंड के तत्त्वावधान में आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के 54 वे दीक्षा दिवस के प्रसङ्ग पर आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज का अवदान विषय पर राष्ट्रीय वेबीनार आयोजित की गई।

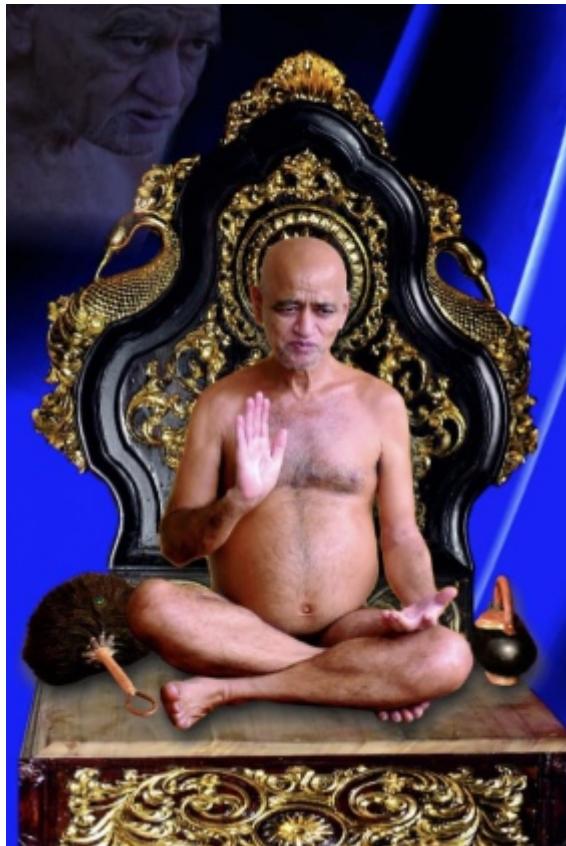
वर्चुअल आयोजित इस कार्यक्रम में वक्ताओं ने आचार्यश्री को भारतीय संस्कृति संवाहक बताया।

प्रारंभ में मंगलाचरण डॉ. मानसी जैन हटा ने किया इसके बाद आचार्यश्री के चित्र के समक्ष दीप प्रज्ज्वलन वरिष्ठ समाजसेवी सुनील धुवारा उपाध्यक्ष श्री दिगंबर जैन सिद्धक्षेत्र द्वोणगिरी ने सपरिवार किया। स्वागत भाषण डॉ. प्रगति जैन इंदौर ने प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का सफल संचालन डॉ. ममता जैन पुणे ने किया। कार्यक्रम के संयोजक मनीष विद्यार्थी शाहगढ़, मुख्य संयोजक आचार्य विद्यासागर युवा मंच बुंदेलखंड व पंकज जैन छतरपुर प्रांतीय संयुक्त सचिव बीजेएस (पूर्व) रहे। मुख्य अतिथि सुरेश जैन आईएस भोपाल, न्यायमूर्ति श्रीमती विमला जैन सेवानिवृत्त न्यायाधीश व प्राचीश जैन, सहायक संचालक लोक शिक्षण संचालनालय सागर संभाग रहे।

सारस्वत अतिथि ब्र. जयकुमार निशांत भैया, निर्देशक प्रागैतिहासिक तीर्थक्षेत्र नवागढ़ ने कहा कि ठंड, बरसात और गर्मी से विचलित हुए बिना आचार्यश्री ने कठिन तप किया। उनका त्याग और तपोबल आज किसी से छिपा नहीं है। इसी तपोबल के कारण सारी दुनिया उनके आगे न तमस्तक है। 53 वर्ष से वे एक महान साधक की भूमिका में हैं। उनके बताए गए रास्ते पर चलकर हम देश तथा संपूर्ण मानव जाति की भलाई कर सकते हैं।

अध्यक्षता करते हुए डॉ. विमल कुमार जैन जबलपुर, प्रांतीय अध्यक्ष भारतीय जैन संघटना (पूर्व) ने कहा कि असाधारण व्यक्तित्व, कोमल, मधुर और ओजस्वी वाणी व प्रबल आध्यात्मिक शक्ति के कारण सभी वर्ग के लोग आचार्य श्री विद्यासागर जी की ओर आकर्षित हैं, वे सही मायने में राष्ट्रसंत हैं। धर्म की वैज्ञानिक, सहज, सरल व्याख्या आचार्यश्री ने उपलब्ध कराई है। साधना के सांचे में उन्होंने खुद को ढाला। उनकी प्रेरणा से संचालित स्वालम्बी योजना से हजारों कैदियों के जीवन की दिशा ही बदल गयी है।

आचार्य विद्यासागर युवा मंच बुंदेलखंड के निर्देशक डॉ. सुनील



संचय ललितपुर ने कहा कि आचार्यश्री जन-जन की आस्था के केंद्र हैं। इनकी प्रेरणा से हजारों गौवंश की रक्षार्थ दयोदय गौशालाएं संचालित हो रही हैं, हिंदी भाषा अभियान, इंडिया हटाओ भारत लाओ अभियान, हथकरघा स्वावलंबन रोजगार, स्वदेशी शिक्षा, संस्कृत हिंदी, अंग्रेजी का बेजोड़ साहित्य, हाइकू आदि उनकी श्रेष्ठतम साधना उन्हें संत शिरोमणि कहलाने के लिए काफी है। साधना के सुमेरु आचार्यश्री आज भारतीय सांस्कृतिक जीवन मूल्यों के पतन को देखते हुए संरक्षणात्मक संवाद का बिगुल बजा रहे हैं, यही कारण है कि आप जनमानस के बीच भारतीय संस्कृति के पुरोधा महापुरुष के रूप में आदरणीय बन गए हैं। 2018 में ललितपुर में उनकी भव्य अगवानी हुई थी।

अंतर्राष्ट्रीय विदुषी डॉ. नीलम जैन पुणे ने कहा कि आचार्यश्री की कालजीय रचना मूकमाटी उत्कृष्ट काव्य कृति है। इस कृति पर 22 से अधिक पीएचडी हो चुकी हैं। उन्होंने पूरी मानवता के लिए कार्य किए हैं। विशिष्ट अतिथि वरिष्ठ समाजसेवी राजेश राणी बक्सवाहा ने

कहा कि आचार्यश्री आज रा-रा, मन-मन में वसे हैं। वे श्रमण संस्कृति की ध्वजा को लहरा रहे हैं। उन्होंने नैनागिर से जुड़े आचार्यश्री के प्रेरक संस्मरण भी साझा किए।

वरिष्ठ लेखक राजेंद्र जैन महावीर सनावद ने कहा कि नई शिक्षा नीति में आचार्यश्री के मार्गदर्शन को शामिल किया है। उन्होंने नई शिक्षा नीति को दिशा दी है। आचार्यश्री की प्रेरणा से जेलों में संचालित हथकरघा से कैदियों का जीवन बदल रहा है। उनकी रचना का अंश मध्य प्रदेश के पाठ्यक्रम में भी शामिल है।

प्रो. पीके जैन, छतरपुर ने कहा कि हिंदी भाषा अभियान एवं इंडिया नहीं भारत बोलो के उनके अभियान भारतीय संस्कृति को समुन्नत बनाते हैं। आचार्यश्री रत्नों के रत्नाकर हैं।

कार्यक्रम संयोजक सुनील जैन शिक्षक, सचिव बीजेएस सागर ने आभार व्यक्त किया। इंजी. अशोक पालंदी जबलपुर राकेश जैन पालंदी दमोह, श्रीमती मीना जैन टीकमगढ़, श्रीमती अर्चना जैन पम्पी बरायठा, श्रीमती मीना जैन, सुनील शास्त्री सोजना आदि ने अपनी विनयांजलि समर्पित की।





तीर्थक्षेत्र कमेटी तीर्थों की रक्षा का गुरुतर भार उठा रही है- मुनिपुगंव श्री सुधासागरजी महाराज

श्री शिखरचन्दजी पहाड़िया को दिया लाइव आशीर्वाद

तीर्थक्षेत्र कमेटी तीर्थ की उन्नति के काम को आगे बढ़ायेगी- राष्ट्रीय अध्यक्ष, श्री पहाड़िया

चवलेश्वर तीर्थ भीलवाड़ा- राजस्थान के प्रसिद्ध तीर्थ चवलेश्वर पार्श्वनाथ तीर्थ भीलवाड़ा में विराजमान संत शिरोमणि आचार्यश्री विद्यासागर जी महाराज के परम प्रभावक शिष्य आध्यात्मिक संत मुनि पुगंव श्री सुधासागरजी महाराज के सान्निध्य में चलने वाले जिज्ञासा समाधान के सीधे प्रसारण में भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के नव निर्वाचित राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री शिखरचन्दजी पहाड़िया ने अपनी जिज्ञासा खते हुए कहा कि मुझे भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के अध्यक्ष का भार सौपा गया है तीर्थक्षेत्र कमेटी मुख्य रूप से तीर्थ की सुरक्षा देख रही हैं हम सब मिलकर इस कार्य को बहुत अच्छे से कर सके इस हेतु आपका आशीर्वाद व मार्गदर्शन दें। अभी कोरोना काल चल रहा है सभी जगह आने जाने की मनाई चल रही है ऐसे में तीर्थक्षेत्र कमेटी के लिए आपके विशेष आशीर्वाद की आवश्यकता है।

जिज्ञासा समाधान में मुनि पुगंव श्री सुधासागरजी महाराज के भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री शिखरचन्दजी पहाड़िया को आशीर्वाद देते हुए कहा कि शिखरचन्दजी को मैं जानता हूँ ज्ञानोदय तीर्थ अजमेर के तात्कालिक अध्यक्ष हमारे विशेष भक्तों में निहाल पाहाड़िया के अभिन्न मित्रों में होने के कारण ये हमारे सम्पर्क में रहे वे हमेशा संत सेवा में समर्पित रहने वाले व्यक्ति हैं। भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के लिए भी वर्षों से काम कर रहे हैं। आशीर्वाद माँगा है तो तीर्थक्षेत्र कमेटी सभी तीर्थ की जिम्मेदारी उठाते हुए सिर्फ तीर्थ की सुरक्षा को अपने हाथ में ले ये भारत की एक मात्र ऐसी कमेटी है जो उत्तर से दक्षिण तक और तेरह बीस के झाम्ले से ऊपर उठकर है। तीर्थक्षेत्र कमेटी में आपको सेवा देने का सौभाग्य मिला है तो कुछ ऐसा करो कि आनेवाली पीढ़ीया आपको याद करें सब बातों को छोड़ कर सिर्फ एक ही लक्ष्य होना चाहिए कि हमारे तीर्थ सुरक्षित हो।

मुनिपुगंव 108 श्री सुधासागर जी महाराज ने प्रवचन में कहा कौन सा रास्ता है चाहने वाले तो बहुत है दुनिया में, लेकिन अपने चहेते के लिए मरने को कौन



Neeraj

तैयार है। हम शराब गुटका खाने पीने के लिए मरने को तैयार हैं तो समझ लेना आपका अगला जन्म आपका शराब गुटखा वाले के ही यहाँ आपका जन्म होगा। हम जिसके लिए मरने को तैयार हैं वह सब हमको अगले जन्म में प्राप्त होगी हम शराब गुटखा के लिए अपने परिवार को छोड़ देने को तैयार है शराब के लिए अपने परिवार को परेशानी में डाल देते हैं।

संकट में क्या करें : मुनि श्री ने कहा कि संकट जब भी आए धर्म करते हुए आए भगवान मैं आपके द्वारे पर इसलिए आया हूँ कि आप मुझे बचा लेना इसलिए नहीं आया, इसलिए आया मरु तो मैं तेरे द्वारा पर मरु, एक सम्यकदृष्टी कहता है मैं भगवान के यहाँ अपनी रक्षा करने नहीं आया हूँ मैं भगवान की रक्षा करने आया हूँ, मिथ्यादृष्टि भगवान गुरु से अपनी रक्षा

करने आता है। धर्म संकट को बुलाने के लिए किया जाता है मैं संकटों से लड़ूंगा ये भावना भाता हैं। गुरु को क्यों बना रहे हैं हमारे काम आएंगे उनकी सेवा करने के लिए बनाया है उनकी रक्षा कर सकें इसके लिए बनाया है भगवान और गुरु की आज्ञा के लिए सब कुछ लुटा सकते हो। कौन से मंत्र के लिए आप मरने को तैयार हो ? हम किस ओर बढ़े कि हमें सफलता मिल जाए ओर बढ़े की विफलता से बच जायें, हमें इष्ट क्या है? अनिष्ट क्या है? जिसको हम नहीं चाहते उन सबको अनिष्ट में डाल दें, इष्ट जिसको हम चाहते हैं वह इष्ट हैं।

णमोकार मंत्र को हम चाहते हैं। प्राणों से प्यारा है, हम जिसको चाह रहे हैं 99% बैईमानी से हम चाह रहे हम जिसको चाहते हैं उसके लिए सब कुछ अपने प्राण तक देना पड़े तो दे सकते हैं एक चोर ने णमोकार मंत्र के लिए मौत को स्वीकार कर लिया।

उन्होंने कहा कि मैं कभी अपनो द्वेष नहीं करूँगा, आसाधना नहीं करूँगा, झगड़ा मत करना, अपने के सामने मान मत करना। अपनो पर क्रोध नहीं करूँगा, परिवार के सामने करते हैं हम गुरुओं के सामने मायाचारी करने लगते हैं जिन जिन को अपना मानते हो उनसे द्वेष मत करना जो-जो अपने है उनसे द्वेष मत करना और परायों से राग मत करना।





आचार्य पद के बाद अन्तर्मना के सानिध्य में पहली भव्य जैनेश्वरी दीक्षा समारोह सम्पन्न, जैन जगत के इतिहास में पहली बार ही परिवार के 4 सदस्यों ने ली जैनेश्वरी दीक्षा

प्रसन्न सागर के तप के वृक्ष के ऊपर उनकी साधना के फल आएंगे लग लजाएँगे। वे अब दीक्षा देंगे मैंने उन्हें अनुमति दे दी है। मेरी भी बहुत आनंदित हूँ भक्तों "दीक्षा जीवन की परीक्षा है" दीक्षा बड़े से बड़ा विद्रोह है स्वयं में स्वयं के द्वारा क्रांति है विद्रोह से मेरा तात्पर्य इक्छाओं को संभालना, कामनाओं से जूझना है। जो संस्कार आदिकाल के हैं वे उदय में तो आएंगे। सरल नहीं है ये मार्ग भक्तों "दीक्षा एक शहद लगी तलवार है उनको चाटने जैसा है सन्यास लेना" यह बात पुष्पगिरि तीर्थ प्रणेता गणाचार्य श्री पुष्पदंत सागर जी महाराज ने निमियाघाट झारखण्ड जैन मंदिर में अन्तर्मना आचार्य प्रसन्नसागर जी महाराज के सानिध्य में हो रही जैनेश्वरी दीक्षा समारोह में ऑनलाइन प्रवचन के माध्यम से दीक्षार्थियों के साथ भक्तों को प्रवचन देते हुये कही।

उन्होंने कहा कि "समाप्त जहाँ होती है इच्छा, वहाँ से प्रारम्भ होती है दीक्षा" यह जीवन एक ऐसी परीक्षा है जहाँ ईर्ष्या, निंदा, अपनाम भी होगा उस समय तुम्हारी समता, समर्पण, करुणा व सन्यास की असली दीक्षा होगी। अग्नि परीक्षा होगी। सीता रानी की तरह तुम अग्नि परीक्षा में सफल हो गए तो सब का कल्याण होगा जगत में तुम्हारी चर्चा होगी।

प्रसन्नसागर एक किसान है, दीक्षार्थी एक बीज, अब तुम अंकुरित होकर पौधा व पेढ़ बनोगे। इसी तारतम्य में दीक्षार्थी भाई बहनों का मनोबल व उत्साह वर्धन करते हुए सौम्य मूर्ति पीयूष सागर जी ने कहा कि "ना "राज" है जिंदगी ना "नाराज" है जिंदगी याद रखना बस जो है "आज" है जिंदगी....जैनेश्वरी दीक्षा अर्थात् स्वयं को स्वयं से जोड़ने की शिक्षा, सिद्धालय तक पहुंचने वाली दीक्षा और समाधि की साधना सिखाने वाली शिक्षा है।

कार्यक्रम से पूर्व तपाचार्य अन्तर्मना आचार्य श्री प्रसन्न सागर जी महाराज के सानिध्य सौम्य मूर्ति मुनि श्री पीयूष सागर जी महाराज के निर्देशन में ऊर्जावान भूमि के अलौकिक आध्यतिमिक अभूतपूर्व अतिमहान सर्वश्रेष्ठ सर्वजेष सम्प्रदेश शिखर पर्वत की पार्श्व तहलटी के निमिया घाट में विराजमान अतिशयकारी पार्श्वनाथ भगवान की बरदानी छांव तले सत्य सम तट शांति संतोष को देने वाली भव्यतिभव्य जैनेश्वरी दीक्षा समारोह का शुभारंभ किया गया। प्रवक्ता श्री रोमिल जैन सोनकच्छ ने बताया सर्व प्रथम बहन खुशी, मुक्ति, आरु, किट्स, जैनिशस जैन के द्वारा मंगलाचरण, श्री अमित बड़जात्या द्वारा ध्वजारोहण, श्री राजेश नवदिया द्वारा दीप प्रज्जवलन वर्षा सेठी टीम द्वारा स्वागत नृत्य नाटिका के साथ हुआ। जिसके बाद ब्र.चारणी बीना दीदी मध्यलोक व श्रमणाचार्य विशुद्ध सागर जी संघस्थ ब्रह्मचारी पीयूष, हार्दिक व सौरभ भैया के साथ दीक्षार्थियों द्वारा आचार्य श्री को श्री फल भेट किया गया। जहाँ गुरुदेव ने सभी को अपना मंगल आशीर्वाद प्रदान किया। कार्यक्रम का संचालन ब्र.तरुण भैया इंदौर द्वारा दीक्षार्थियों व उनके परिवार को सम्मान के साथ आमंत्रित कर पूज्य आचार्य भगवान के पाद प्रक्षालन कराए गए। जिसके बाद दीक्षार्थी परिवार जनों ने उनसे जुड़ी कई बातों को गुरुदेव के सामने साझा किया। साथ धूलियांन के सेठी परिवार द्वारा अपनी माता के दीक्षा होने से पूर्व भजन के माध्यम से अपने भाव व्यक्त किये व आचार्य श्री से जैनेश्वरी दीक्षा के लिए आग्रह किया। गौरतलब है कि जैन जगत के इतिहास में पहली बार

जैन तीर्थवंदना



परतापुर राजस्थान के एक ही परिवार में 4 सदस्य एक साथ गुरुदेव से दीक्षा ले रहे थे। यह भी ज्ञात हो कि अन्तर्मना की मुनि दीक्षा संस्कार भी परतापुर में ही सम्पन्न हुई थे जिस समय श्री माणकचंद जी का परिवार वहाँ मौजूद था। सौभाग्य की बात ये है कि उसी परिवार के सामने आज अन्तर्मना आचार्य श्री द्वारा उनके बेटों को दीक्षा दी गई।

दीक्षा विधि प्रारम्भ :-

देश, समाज परिवार संघस्थ सभी सन्तो से अनुमति लेकर व अपने आत्महितंकर तपस्वी सप्राट आचार्य सन्मति सागर जी, शांति सागर जी पुष्पदंत सागर सहित गुरुओं की बैंदना कर अन्तर्मना आचार्य व मुनि पीयूष सागर जी महाराज ने साथ में धार्मिक क्रियाओं के साथ मंत्रोत्त्वार के द्वारा दीक्षार्थियों के केशलोचन की विधि आरम्भ की जिसके बाद पद अनुसार दीक्षार्थियों के संस्कार कर मुनि दीक्षार्थी को 28 मूलगुण, आर्थिका माता जी को 26 मूलगुण के व क्षुल्लक व क्षुल्लिका दीक्षार्थी आवश्यक नियमों का संकल्प दिलाकर उनका संन्यासी जीवन के नाम की घोषणा की जहाँ भक्तों ने जय जय गुरुदेव के साथ चतुर्विंद संघ की जयघोष की।

अन्तर्मना आचार्य ने मंगल आशीष देकर दीक्षार्थियों को मोक्ष मार्ग की ओर अग्रसर किया जिसके अंतर्गत गुरुदेव के संघस्थ श्री भरत भैया भेयावत जी की मुनि दीक्षा देते हुए उन्हें मुनि श्री 108 अप्रमत्त सागर जी महाराज ऐलक श्री पर्व सागर जी की मुनि दीक्षा करते हुए उन्हें मुनि श्री 108 पर्व सागर जी महाराज, श्रीमति सरोज भेयावत को आर्थिका ज्ञानप्रभा माता जी, श्री मति राजमती भेयावत को आर्थिका चारित्र प्रभा माता जी, श्री राघवैद्य भेयावत को क्षुल्लक परिमल सागर जी श्री मति भवरी देवी जी धूलियांन बंगाल को क्षुलिका 105 दर्शन प्रभा माता जी, की उपाधियों प्रदान कर उन्हें संन्यासी जीवन बिताने का संकल्प दिलाया। इस अवसर पर संघ के अज्जू भाई धूलियांन, सजन जैन बंटी अहमदाबाद, सहित कई गुरुभक्त मौजूद थे। संचालन ब्र.तरुण भैया इंदौर व आभार गुरुभक्त परिवार की ओर से डॉ. संजय जैन इंदौर द्वारा किया गया। उक्त आयोजन जूम चैनल अन्तर्मना वाणी फेसबुक द्वारा प्रसारित किया गया।



तीर्थराज सम्मेद शिखर जी में आचार्य प्रसन्न सागर जी महाराज का हुआ भव्य मंगल प्रवेश सम्मेदशिखर जी में विराजमान सभी साधु संतों ने किया हार्दिक स्वागत



शास्वत तीर्थ सम्मेद शिखरजी की पावन भूमि पर अन्तर्मना आचार्य १०८ प्रसन्न सागर जी महाराज का ८ संतों के संघ सहित शनिवार को मधुबन स्थित

जैन संस्था श्री सिद्धायतन में भव्य मंगल प्रवेश हुआ। आचार्य श्री प्रसन्न सागर जी महाराज संघ का आचार्य श्री विशुद्ध सागर जी महाराज, मुनि श्री प्रमाण सागरजी महाराज संघ का भव्य मिलन हुआ।

अन्तर्मना आचार्य की भव्य प्रवेश की अगुआई करने सिद्धायतन के संस्थापक संतोष सेठी, ललिता सेठी, अरिहंत सेठी समेत सैकड़ों की संख्या में आचार्य भक्त शामिल थे।

सिद्धायतन के मुख्य द्वार पर साधु संघ के पहुंचते ही अन्तर्मना आचार्य समेत समस्त साधु संघ का सिद्धायतन परिवार द्वारा पाद परछालन किया गया।

पिछले कुछ दिनों से अन्तर्मना आचार्य डुमरी के निमियाधाट जैन मंदिर स्थित धर्मशाला में रुक कर जप तप व साधना में लीन थे। मधुबन पारसनाथ प्रवेश के पश्चात आचार्य श्री संघ सहित चार माह का मंगल चातुर्मास पारसनाथ पर्वत पर रह कर करेंगे ऐसी सूचना है।



परमपूज्य जगतगुरु, कर्मयोगी स्वस्ति श्री चारुकीर्ति भट्टारक महास्वामीजी परमपूज्य पंडिताचार्य श्री ध्वलकीर्ति भट्टारक महास्वामीजी एवं भट्टाकलंक के परमपूज्य अकलंककीर्तिजी भट्टारक का नागपुर में पदार्पण



परमपूज्य त्रय भट्टारक महास्वामी बुधवार दिनांक 14 जुलाई 2021 को सूर्यनगर (नागपुर) स्थित भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमटी के महामंत्री श्री संतोष जैन पेंढारी के निवास स्थान पर पहुंचे वहाँ उनका भव्य स्वागत हुआ और रात्रि विश्राम श्री संतोषजी के घर में किये। दूसरे दिन गुरुवार को तीनों भट्टारकों के साथ श्री संतोष जैन पेंढारी भी



परमपूज्य आचार्य विद्यासागरजी महाराज बें दशनार्थ गाडरवाडा (नरसिंहपुर) गये वहाँ पूज्य भट्टारक चारुकीर्ति स्वामीजी ने स्वरचित कन्नड भाषा में लिखे महाग्रन्थ ध्वला एवं महाध्वला की प्रतियाँ आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज को भेंट कर उनका आशीर्वाद प्राप्त किया। रात्रि विश्राम श्री राम टेक में हुआ। सभी भट्टारक महास्वामीजी ने श्री संतोष जैन पेंढारी को अपना असीम स्नेह दिया।





तीर्थक्षेत्र कमेटी के कार्याध्यक्ष व महामंत्री एवं समाचार जगत के संस्थापक व प्रधानसंपादक श्री राजेन्द्र के. गोधा जी का निधन

कमेटी के राष्ट्रीय अध्यक्ष सहित सभी पदाधिकारियों ने श्रृङ्खांजलि समर्पित की
राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत, पूर्व मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे व राज्यपाल कलराज मिश्र ने ट्रीट कर गोधा जी के
निधन को पत्रकार जगत की अपूरणीय क्षति बताया

भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय महामंत्री सरल स्वभावी, मूदुभाषी, उज्ज्वल व्यक्तित्व के धनी, सेवाभावी, कर्मठ कार्यकर्ता व दूरदृष्टा श्रीमान् राजेन्द्र गोधा जी (समाचार जगत) जयपुर का असामियक निधन दिनांक 19/06/2021 दिन शनिवार को हो गया है।

श्री गोधाजी के निधन का समाचार सम्पूर्ण पत्रकारिता जगत, राजनीति से सरोकार खबरे वाले नेता, तीर्थक्षेत्र कमेटी के समस्त पदाधिकारियों, समाज बंधु और एवं आपको चाहने वालों को यह खबर रुला गयी। गोधा जी के असामियक निधन हो जाने से समस्त दिगंबर जैन समाज में शोक है। गोधा जी का निधन हो जाना समस्त दिगंबर जैन समाज लिए अपूरणीय क्षति है, उनकी रिक्तता को कोई पूरा नहीं कर सकता है, उनके योगदान को सदैव स्मरण किया जाएगा। 24 अप्रैल से गोधाजी का स्वास्थ्य खराब चल रहा था। दुर्लभजी अस्पताल में गोधा जी उपचार चल रहा था।

एक साधारण परिवार में जन्म लेकर दुनिया में अपना नाम स्वर्ण अक्षरों में लिखवाने वाले

कर्मयोगी थे राजेन्द्र के। गोधा कहने को हर व्यक्तित्व का परिवार होता है पर सम्बन्धों को गहराई तक निभाने का वादा खबरे वाले गोधा जी का नाता देश में लाखों घरों से परिवार जैसा ही था। जैन समाज की सामाजिक संस्थाओं से उनका सीधा सरोकार रहा और समाज में समरसता और एक दूसरे की मदद से भक्ति और आस्था की अलख जगाने में आपकी विशेष भूमिका रही। आप शैक्षणिक विकास के प्रबल पक्षधर रहे। आपने समाज की शिक्षा संस्थाओं के चहुंमुखी विकास के लिए जो प्रयास किये व योगदान दिया वह सदा स्मर्णीय रहेगा। एक वरिष्ठ पत्रकार के नाते राजनेताओं से आपके अच्छे संबंध थे।

पूर्व मुख्यमंत्री भैरोसिंह शेखावत, शिवचरण माथुर, हरिदेव जोशी, जगनाथ पहाड़िया, वसुंधरा राजे और वर्तमान मुख्यमंत्री अशोक गहलोत के साथ आपके मधुर संबंध रहे और आपके निवास स्थान पर आते-जाते रहते थे।

श्री गोधा राजस्थान का लोकप्रिय समाचार, समाचार जगत के संस्थापक व प्रधान संपादक थे। तथा जैन समाज के कर्मठ कार्यकर्ता व अग्रणी नेता थे। गत्



दिनों पहले गोधा जी को सम्मेदशिखर जी समन्वय समिति के स्थाई सदस्य के रूप में मनोनीत भी किया गया था।

राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने ट्रीट कर कहा कि प्रदेश के वरिष्ठ पत्रकार और समाचार जगत के सम्पादक श्री राजेन्द्र गोधा के निधन की खबर दुखद है। काफी दिनों से वे अस्पताल में एडमिट थे, उनके स्वास्थ्य को लेकर मैं परिवार के सम्पर्क में था, दो दिन पहले ही उनके पुत्र से स्वास्थ्य की जानकारी ली थी। पत्रकारिता एवं सामाजिक क्षेत्र में उन्होंने उल्लेखनीय योगदान दिया है। उनका निधन पत्रकारिता जगत के लिए बड़ी क्षति है। ईश्वर से प्रार्थना है शोकाकुल परिजनों तथा स्व. श्री गोधा के मित्रों को यह आघात सहने की शक्ति दें एवं दिवंगत आत्मा को शांति प्रदान करें।

राजस्थान के राज्यपाल कलराज मिश्र ने ट्रीट कर कहा कि वरिष्ठ पत्रकार एवं समाचार जगत के सम्पादक श्री राजेन्द्र गोधा जी का निधन अत्यंत दुःखद है, उनके परिजनों के प्रति संवेदना व्यक्त करता हूँ, ईश्वर दिवंगत आत्मा को शांति और शोक संतप्त परिवार को यह दुःख सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

भारतवर्षीय दि. जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री शिखरचन्द्र पहाड़िया ने गोधा जी के अवसान पर गहरा दुःख व्यक्त करते हुए कहा कि वे उत्साह से भरे रहते थे, तीर्थक्षेत्र कमेटी, महावीर विद्यालय, श्री महावीर जी सहित अनेक राष्ट्रीय संस्थाओं में उनके साथ वर्षों कार्य करने का मौका मिला वे सहज सरल व्यक्ति के धनी थे, उनका गुरु भक्ति के प्रति समर्पण देखते ही बनता था, तीर्थक्षेत्रों के लिए आपके योगदान को कभी भुलाया नहीं जा सकता।

गोधाजी का जाना अपूरणीय क्षति- श्री अशोक पाटनी (आर. के. मार्बल्स)

भारतवर्षीय दि. जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के शिरोमणि परम् सरक्षक श्री अशोक पाटनी ने गोधा जी के निधन पर भाववीनी श्रृङ्खांजली समर्पित करते हुये जैन



समाज के लिए अपूर्णीय क्षति बताया है, गोधा जी ऐसे व्यक्ति थे जिनके लिए कोई काम असंभव नहीं था, गुरुदेव के प्रति समर्पण देखते ही बनता था, राजस्थान में हर व्यक्ति के लिए वे सहज उपलब्ध थे, राजस्थान के तीर्थों, शिक्षण संस्थानों, समाजिक विकास में योगदान के लिए वे हमेशा याद किये जायेंगे।

तीर्थक्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री प्रदीप जैन (पी एन सी) आगरा ने श्री राजेन्द्र के, गोधा जी के दुःखद वियोग पर कहा कि जैन समाज का चमकता सितारा चला गया वे तीर्थ के जीर्णोंद्वार के साथ नव निर्माण के पक्षधर थे उनकी सोच को मुनि पुांव श्री सुधासागरजी महाराज के आशीर्वाद ने और भी मजबूत किया वे किसी काम को अपने हाथ में लेकर कभी पीछे नहीं मुड़े आगे ही बढ़ते चले गए। तीर्थक्षेत्र कमेटी के पूर्व राष्ट्रीय उपाध्यक्ष व चाँदखेड़ी कमेटी के अध्यक्ष श्री हुकमकाका ने कहा

कि जब से ये समाचार सुना है किसी काम में मन नहीं लग रहा है मन वहुत दुखी है दो दिन पहले ही जयपुर जाकर गोधा जी के स्वास्थ्य की जानकारी परिवार जनों से ली थी। गोधा जी ने तीर्थ के विकास उत्थान व समाज धर्म संस्कृति की सुरक्षा और संवर्धन के लिए अभूत पूर्व कार्य किया वे हमेशा हमारी यादों में रहेंगे।

तीर्थक्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय कार्यकारणी सदस्य व मध्याचंल तीर्थक्षेत्र कमेटी के अध्यक्ष श्री अरविंद कुमार सिंघई ने कहा कि तीर्थक्षेत्र कमेटी में उनके साथ वर्षों साथ रहने का सौभाग्य मिला उनके अंदर गुरु भक्ति कूट-कूट कर भरी थी। 2019 में महाराष्ट्र एवं कर्णाटक के सांगली, कोल्हापुर और बेलगाम जिलों में आई प्रलयकारी बाढ़ के कारण अनेकों लोगों के मकान बह चुके थे ऐसे जैन भाई बंधुओं को आपके ही कार्यकाल में तीर्थक्षेत्र कमेटी द्वारा संकट के समय में आर्थिक सहायता एवं घर बनवाकर दिये गये।

कोरोना काल में भी आप जैन समाज के लिए आर्थिक सहायता के लिए तीर्थक्षेत्र कमेटी को आगे लाये। आपके कार्यकाल में तीर्थक्षेत्र कमेटी ने लगभग 1600 से अधिक परिवारों की आर्थिक सहायता दी तथा अनेक जैन मठों, तीर्थक्षेत्रों व शैक्षणिक संस्थाओं को आर्थिक सहायता प्रदान कर उनकी रक्षा की है।

महान व्यक्तित्व के धनी - श्री राजेन्द्र के, गोधा जी का जन्म ५ जुलाई १९४९ को श्री मूलचंद जी गोधा एवं माता श्रीमती कमलादेवी जी गोधा के यहाँ हुआ, आप चार भाइयों एवं तीन बहिनों में दुसरे नं. के पुत्र थे। श्रीमान गोधा जी का विवाह १५ फरवरी १९७५ को बांदीकुई निवासी श्री भागचंद जी छाबड़ा की



समाज भूषण श्री राजेन्द्र के. गोधा

संस्कारपत्र एवं संसाधन - समाचार जगत, जयपुर

सुपत्री त्रिशला जी के साथ संपन्न हुआ था। श्रीमान गोधा जी अपने पीछे भरा-पूरा परिवार छोड़ गए हैं। आपका वर्तमान में प्रकाशित होने वाला दैनिक समाचार जगत का प्रकाशन १९८० में प्रारम्भ हुआ, १९९६ में पूर्व उपराष्ट्रपति एवं तात्कालीन मुख्यमंत्री स्व. श्री भैरोसिंह शेखावत के द्वारा विमोचन से राज्यस्तरीय दैनिक समाचार जगत सायंकालीन एवं प्रातः कालीन दोनों संस्करणों का प्रकाशन प्रारम्भ हो गया जो अभी तक चल रहा है। आप देशभर की विभिन्न संस्थाओं के गरिमामय पदों को सुशोभित करते हुए जनमानस के प्रति दया एवं प्रीती का भाव रखकर अपने कार्यों को श्रेष्ठता के साथ सम्पादित करते थे। पूज्य मुनि श्री सुधासागर जी महाराज के सानिध्य में श्री दिगम्बर जैन समाज राजस्थान की ओर से "समाज रत्न" एवं "समाज भूषण" की उपाधि, श्री जैन सोशल ग्रुप फेडरेशन की ओर से "जैन रत्न" की उपाधि, पत्रकारिता के

क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्यों के लिए राजस्थान दिवस समारोह समिति द्वारा "राजस्थान श्री" की उपाधि, राजस्थान सरकार की वर्गीकरण सलाहकार समिति के सदस्य रहे, तत्कालीन उपराष्ट्रपति स्व. श्री भैरोसिंह शेखावत जी के हाथों से पिंक सिटी प्रेस क्लब द्वारा आपको "लाइफ टाइम एचीवर्मेंट अवार्ड" से सम्मानित किया गया था।

श्री गोधा जी को महत्वपूर्ण सक्रियता, कार्यशैली व जिम्मेदारी पूर्ण भूमिका निभाने की वजह से ही अंतिम समय तक विभिन्न शैक्षणिक, धार्मिक एवं समाजिक संस्थाओं में पदासीन रहे। श्री राजेन्द्र के गोधा पिछले ढाई वर्ष से भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष व महामंत्री पद सुशोभित थे, आप श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र पदमपुरा एवं दिगम्बर जैन सोशल ग्रुप, श्री दिगम्बर जैन मंदिर लक्षकर के संरक्षक, श्री दिगम्बर जैन प्रतिनिधि महासंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष, श्री महावीर दिगम्बर जैन शिक्षा परिषद् के अध्यक्ष, आदर्श दिगम्बर जैन महिला महाविद्यालय समिति, श्री महावीर जी, श्री पद्मावती दिगम्बर जैन गल्लसीनियर सैकेंडरी स्कूल, जयपुर, अनुराग संगीत संस्थान, जयपुर, श्री दिगम्बर जैन श्रमण संस्कृति संस्थान, सांगानेर के कार्याध्यक्ष रहे। इसके साथ ही आप संयम स्वर्ण जयन्ती महोत्सव समीति जयपुर (राजस्थान) के महामंत्री रहे संत सुधासागर पब्लिक स्कूल केंद्रीय शिक्षा परिषद् के मुख्य समन्वयक तथा इंडियन कॉसिल ऑफ़ सोशल वेलफेयर राजस्थान ब्रांच के प्रबंधक समिति के सदस्य रहे।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी महापरिवार श्री राजेन्द्र के. गोधा जी को विनप्र श्रद्धांजली समर्पित करता है।